

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा
तब तुम सामर्थ पाओगे.....।"
प्रेरित १:८

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

क्या आपने अपने जीवन में पवित्रात्मा के तीन कार्यों को अनुभव किया है?

- पवित्र आत्मा की सर्वदा उपस्थिती - पापों से मुक्ति
- पवित्र आत्मा से भरे हुए - शुद्धीकरण जो हो रहा है
- पवित्र आत्मा में बपतिस्मा - प्रचार सभा के लिए तैयार

सच्चे जीवन की बाईबल पर आधारित

दैवी प्रकाश पर आधारित शिक्षा

- वास्तविक जीवन के विषयों से शुरू
- परमेश्वर की ओर से जागृती को जोड़ना
- पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा बदलाव अनुभव करना

लेगैड पाठ्य पुस्तक सूची, अपने पढ़ने वालों से चाहती है की हम इन चीज़ों से बातचीत करें :

- जीवन
- वचन
- पवित्रात्मा

लेमैड पबलीकेशन @ क्लू ऑनलाईन, कौम

1-800-466-6961 716-652-6990

यह पुस्तक दोनों लेखकों का मिला जुसा प्रयत्न है। विचार और अभिप्राय दोनों की मिली जुली पढ़ाई का नतीजा है। जो अनुभव बताए गए हैं वे दोनों के हैं। मैं का इस्तेमाल दोनों के विचारों की एकता है।

संशोधन २००२

(C) २००२

मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखित

इस पुस्तक को पुनः उत्पन्न करने और बाँटने की अनुमति पूर्णरूप से है।

मैं पवित्र आत्मा में बपतिस्मा कैसे पाया

यह एक भूख से शुरू हुआ: जब मैं हाई स्कूल के वरिष्ठ साल में था, प्रेरितों के काम की पुस्तक की तरह जीवन बिताने की भूख मेरे अंदर उत्पन्न हुई। जब मैं पौलुस की जीवनी पर एक पुस्तक पढ़ रहा था। मैं पौलुस की तरह जीना चाहता था। मैं चमत्कार करना चाहता था, परमेश्वर की आवाज़ सुनना और परमेश्वर के अभीषेक में धूमना चाहता था। परन्तु मेरा गिरजाघर यह बताता था की इस तरह का जीवन आज कल के मसीहो को नहीं मिल सकता।

एक साल बाद, मेरे बाईबल के प्राध्यापकों ने भी इसी बात का आसवासन दिया। चमत्कार का युग जा चुका है। मेरे यूनानी के प्राध्यापक तो कक्षा के समय में 'अन्य भाषा' बोलने वालों का मज़ाक उड़ाते थे। तो मैं इस बात से सहमत हो गया की गिरजाघर का युग एक अलगाव था जिस में परमेश्वर की शक्ति की अपस्थिति नहीं थी ताकी हम महान और बड़े चमत्कार कर सकें।

यह तब तक बिल्कुल ठीक था, जब तक मैं कालेज के वरिष्ठ साल तक नहीं पहुँचा था। मेरी नयी पत्नी, पैटी, एक शिक्षित अध्यापिका थी। आखरी साल में उस ने विद्यार्थियों को प्रारम्भिक स्कूल में शिक्षा दी। एक औरत जिसको उस ने पढ़ाया वह एक करीस्मैटिक चमत्कारन थी और अती बुद्धिमान भी। उसने मुझे नहीं बताया की वह चमत्कारनी है परन्तु वह अकसर मुझे और पैटी को अपने और अपने परिवार के साथ खाने पर बुलाती। वहाँ वह हमें बताती की कैसे वह और उसका परिवार अकसर बिमार रहते थे और सर्दियों में विभिन्न बिमारीयों के साथ उन्हें अकसर अस्पताल जाना पड़ता था। फिर कुछ वर्ष पूर्व उस ने उन की चंगाई के लिए प्रार्थना करना सीखा और पिछले दो तीन साल से उन में से कोई भी बिमार नहीं पड़ा।

हाँ, यह सच है की उन ईश्वरज्ञान विद्या से, जो मैंने पढ़ी है, यह बात कही भी मेल नहीं खा रही थी, परन्तु मुझे इस से क्या? यह एक व्यक्ति के जीवन की सच मुच की घटना थी और ऐसा हुआ था। मैं कैसे कह सकता था की ऐसा नहीं हुआ?

(कहानी की शक्ति। उस बक्त भी परमेश्वर ने मुझ तक पहुँचने के लिए, कहानी का माध्यम चुना, एक अनुभव जो मेरी सारी ईश्वर जान की विद्या से उच्च था। मैं अनुभव कर रहा था की कहानी की शक्ति किसी के जीवन पर असर कर रही है, चाहे मुझे ईश्वरज्ञान विद्या की कहानी को समझने में, और दस साल लग जाते।)

परमेश्वर की दूर दर्शीता: मुझे परमेश्वर की दूरदर्शीता से प्रेम था। वह हमारे रास्ते में वही डालता है, जिसे हम पा सकें, जब हम उसे पाने को तैयार हों। मैं उसे "दैवी सेरेंडीपिटी" कहता हूँ। सेरेंडीपिटी का मतलब है खुशी, अचानक मुलाकात और मैंने परमेश्वर के इन अचानक मुलाकातों को मिलना सीख लिया है। यह अकसर उस व्यक्ति के पास आते हैं जो इन के लिए तैयार हों।

जो परमेश्वर से अचानक मुलाकात इस समय थी, वह यह थी की वह मुझे एक कैसट के पुस्तकालय ले गया जहाँ १३०० के करीब पढ़ाने वाले कैसट होंगे। वहाँ मुझे डेरेक प्रिंस मिला जो करीस्मा में शिक्षित थे, वे इब्रानीयों और यूनानी में ग्रेडड्यूएट स्तर पर पढ़ाते थे और उन्होंने अपनी ग्रेडजुएट स्वतंत्र निबंध तर्क शास्त्र पर लिखी थी।

अब मुझे बताईए की, क्या यह बिल्कुल अनुकूल नहीं थे की एक बायाँ दिमाग के सोच रखने वाले व्यक्ति, जो विवेकी मसीहत में प्रशिक्षित था, मन से बात करे? डेरेक प्रिंस ही वह था जिस की मुझे अवश्यता थी। मैं ने उस के कई सैकड़ों कैसट को सुना और उन के द्वारा मैंने अपने ईश्वरज्ञान को मौलिक रूप से बदल दीया, यह जान कर की परमेश्वर अपने गिरजाघर के बीच आज भी जीवित है और आज भी चमत्कार और चंगाई दे रहा है, वह बात कर रहा है और भविष्यवाणी भी कह रहा है और शैतानों को निकाल बाहार करता है और हर वह चीज़ करता है जो वह उत्पत्ती से लेकर प्रकाशितवाक्य तक करता आया है। परमेश्वर की शक्ति को ठुकराने की अवश्यता नहीं, केवल इसलिये की हमारी सशयता हेतुवाद में विश्वास करती है। बाईबल फिर भी स्तीर रहेगी और हमारी सभ्यता को ललकारती है - उन लोगो के द्वारा जो यह मानते हैं की वह अभी भी वैसी ही है और अपने जीवन के माध्यम से बताते हैं की यह ऐसा ही है।

मुझे दोनों अध्यात्मविद्या सम्बंधी और अनुभव प्राप्त रुकावटों का सामना करना पड़ा जिस के कारण मुझे मुश्किल हुआ पवित्रात्मा में बपतिस्मा पाना, जो अन्य भाषा में बोलना है और यह कई वर्षों तक मेरे आड़े आया। हम दोनों को जाँचते हैं। और देखते हैं की परमेश्वर इन्हे कैसे ठीक करता है और मुझे पवित्र आत्मा के द्वारा अपने साथ एक खुबसूरत घनिष्ठता में लाता है।

मेरी अध्यात्मविद्या सम्बंधी रुकावटों को जीतना :

१. मुझे यह सिखाया गया था की अन्य भाषाओं में बात करना प्रारंभिक मसीहों के लिए था। यह सच नहीं हो सकता था, क्यों की पौलुस ने कहा है मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, की मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूँ (१कुरी १४:१८) और यकीनन पौलुस कोई बच्चा मसीही नहीं था। अपने झूठे विश्वास को साबित करने के लिए मुझे उस वचन को उस तरह दुबारा लिखना पड़ता, मुझे यह कहते हुए बहुत शर्मींदगी हो रही है की मैं अब तक अन्यान्य भाषाओं में बोल रहा हूँ, क्योंकी मैं एक चेला हूँ और मसीहत का जान माना अगुवा हूँ।

२. मुझे यह सिखाया गया था की यदी बाईबल को तोप की तरह प्रयोग करने लगो तो, अन्य भाषा गायब हो जाती है। इस बात को साबित करने के लिए इस वचन का इस्तेमाल किया गया "परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधुरा मिट जाएगा" (१ कुरि १३:१०) जो सर्वसिद्ध है वह बाईबल नहीं हो सकती क्योंकि, ज्ञान भी मिट जाएगा जब सर्वसिद्ध आएगा (१ कुरि १३:८) और मैंने यकीनन यह नहीं सोचा की ज्ञान इस ग्रह को छोड़ कर जा चुका था हो सकता है की कुछ दिनो बाद मैं यह सोचूं की वह जा चुका है की नहीं।

पौलुस आगे और बताता है की, जब वह सर्वसिद्ध आएगा तो क्या होगा। वह कहता है, 'अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने साम्हने देखेंगे"। (१ कुरि १३:१२) बाईबल महान है परन्तु मुझे नहीं लगता की जो पौलुस कह रहा है उस का मतलब मुख दर मुख है। मुख दर मुख सामना उस वक्त होगा जब मसीह आएगा और हम उस से मिलने आसमान पर उठा लिए जाएंगे और अनंत जीवन उस के साथ बिताएंगे। जब आप मेरी लिखी हुई पुस्तक पढ रहे है तो आप का और मेरा मुख दर मुख सामना नहीं हो रहा है। परन्तु यदी आप मेरे दफ्तर आएँ या घर पर आकर मुझ से मिलें, तब मेरा और आप का मुख दर मुख सामना होगा।

मैंने यह सोच लिया की जो सर्वसिद्ध है वह मसीह खुद है अपने दूसरे आगमन पर और वह अभी भविष्य काल में होगा। इसलिए, अन्यन्य भाषा में वोल्ना और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना आज के लिए है।

३. मुझे यह सिखाया गया की अन्या भाषा एक छोटा उपहार है और उसे तुच्छ माना जाए। परमेश्वर कोई ऐसा उपहार नहीं देता जिसे मैं तुच्छे मानूँ। परमेश्वर केवल अच्छे उपहार देता है। तो मैंने अपनी इस अनादर भावना का पश्चताप किया और उसे खोजना शुरू कर दिया ताकी वह जो भी देना चाहता है वह मुझे दे।
४. मुझे यह सिखाया गया की प्रेम अन्य भाषा से अच्छा है (१ कुरि १३) यह सच हो सकता है, परन्तु बाईबल में यह कहाँ लिखा है की मैं केवल एक ही पा सक्ता हूँ? क्या मैं उन दोनों को नहीं रख सकता?
५. मुझे यह सिखाया गया की अन्य भाषा हर किसी के लिए नहीं है। बाईबल कहती है, "क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते है?" (१ कुरि १२:३०) तो आप देख सकते है की अन्य भाषा हर किसी के लिए नहीं है। परन्तु केवल दो पाठो के बाद, पौलुस कहता है की हर

कोई अन्य भाषा में बोलता है। "..... हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा का अर्थ रहता है।" (१ कुरि १४:२६)। यदि आप की बाईबल में "या" शब्द का प्रयोग किया गया है तो यह गलत है, क्योंकि यूनानी में केवल हर चीज़ की सूची है और कहीं भी "या" शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है।

तदनुसार, हमारे पास एक आयत है जो कहती है की हर कोई अन्य भाषा में नहीं बोल सकते और एक आयत है जो कहती है की हर कोई अन्य भाषा बोल सकता है। इस समस्या का सार मेरी समझ से यह निकलता है की, हम सब अपनी निजी प्रार्थनाओं में अन्य भाषा बोल सकते हैं, परन्तु जहाँ सब मिलकर आराधना करते हैं वहाँ हर कोई अन्य भाषा बोलकर गिरजाघर की आराधना पर महत्व नहीं पा सकता। केवल चन्द लोग ही अन्य भाषा बोलेगे और उन का अनुवाद करना आवश्यक है, ताकी सब लोग इस से फायदा पा सकें।

६. मुझे सिखाया गया की अन्य भाषा बोलने की ज़रूरत नहीं। नहीं, बोलना जरूरी नहीं है। परन्तु आप बोल पाते हैं, यह जान कर की आप वह सब पा सकें जो परमेश्वर आप को देना चाहता है।
- ७ मुझे यह सिखाया गया की अन्य भाषा उपद्रवी है और यदि अविश्वासी इस सभा में शामिल हो जाएं जहाँ अन्य भाषा बोली जाती है, तो वे व्याकुल हो जाएंगे। तो, अनुमान लगाईए की क्या: मसीही की उन्नती का सबसे बड़ा, कारण यह है की वे पवित्र आत्मा के उपहारों के क्यों को आराधना में होने दें। तकरीबन एक तीहाई मसीही अपने निजी जीवनो में पवित्र आत्मा के उपहारों के कार्यों को खोजते हैं।

जो संयुक्त राज्यों में आत्मिक सच्चाई की भूख और आत्मा से मुलाकात करना चाहते हैं वह सब उन्हें साम्प्रदायिक गिरजाघरों में नहीं मिलता और वे अपनी उस प्यास को भुजाने के लिए नए युग की ओर चले गए। धर्म के बंटवारे से पैदा हुए अन्य विश्वास समीचीयों, गिरजाघर कि भरपाई न की गयीं रसीदें हैं।

एक दिन जब मैं परमेश्वर से शिकायत कर रहा था की जिस आराधना में मैं गया था वह बहुत ही नियमविरुद्ध थी, उसने मेरे मन से बात कर के पूछा, "कैसे कोई तमीज़ से पी कर नियम अनुसार रह सकता है"? (प्रेरीत २:१५) (आप जानते हैं, की यह प्रश्न मैंने अपने आप से कभी नहीं पूछा। यकीनन, जब प्रेरितों के काम २ में पवित्र आत्मा उण्डेली गयी थी तो सामान्य मस्तिशक वाले के लिए यह नियम विरुद्ध ही लगा होगा की वे सब पीए हुए हैं, परन्तु परमेश्वर की नज़र में यह ठीक था। हो सकता है की उस

बात पर मुझे परमेश्वर का नजरीया चाहिए था, मेरा नहीं।

८. मुझे सिखाया गया की पापों की मुक्ति के समय मुझे पवित्र आत्मा मिल चुकी थी, और वह पवित्र आत्मा में बपतिस्मा था। यह सच है की पापों की मुक्ति के समय पवित्र आत्मा हम में वास करती है (रोमियों ८:९) बाईबल सिखाती है की इस शुरुआती अनुभव के अलावा हम पवित्र आत्मा से भरे जा सकते हैं (इफी ५:१८) और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पा सकते हैं (प्रेरित १:५,८)

सो, यदि ब्रह्मज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार कहा जाए तो, मैं चमत्कारी बन गया। मैंने अपने मस्तिष्क और मन में यह बात मान ली की परमेश्वर के उपहार और पुकार अखण्डनीय हैं (रोमियों ११:२९) और हम परमेश्वर के वरदानों को अपने निजी जीवन में अपना सकते हैं। मैंने शुरुआत सबसे आसान और मूल वरदान को खोजने से की, जो अन्य भाषा बोलने का उपहार है। मैं इस बात के विश्वास से संतुष्ट था की यह उपहार एक चिन्ह है की वह व्यक्ति पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पा चुका है, कुछ ऐसी चीज़ जिस की भूख मुझ में अब हो रही है। (पैटी कई साल पूर्व ही पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पा चुकी थी, परन्तु उसने इस बात को मुझ से छुपाकर के बहुत बुद्धिमानी की क्योंकि वह यह जानती थी की यदि इस बात को वह मुझे बताएगी, तो मैं उसे नीची नज़र से देखूँगा और कोशिश कर के उस के इस "झूठे अनुभव" को छोड़ देने को कहूँगा)।

अब मैं खोजने लगा की परमेश्वर अपनी शक्ति की आलौकिक स्पष्टता को मेरे जीवन के माध्यम से बताए, खास तौर से मेरे मुँह से। मैं एक चमत्कारी प्रार्थना सभा में गया और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा और अन्य-अन्य भाषा बोलने के उपहार के लिए प्रार्थना करवाई। मुझे प्रार्थना प्राप्त हुई, परन्तु मुझे कुछ अनुभव नहीं हुआ और ना ही मैंने अन्य-अन्य भाषा में बोलना शुरू किया। यह बहुत आशा तोड़ने वाली बात थी, क्योंकि मैंने पूरे दिन उपवास रखा था और मेरी उम्मीद बहुत उँची थी की उस रात मेरे साथ कुछ खास होने वाला था।

मैं घर वापस लौटा, बिल्कुल निराश, की परमेश्वर ने, अन्य-अन्य भाषा बोलने के माध्यम से मुझ पर अपनी सच्चाई नहीं स्पष्ट की। कई महीनों तक मैं पढ़ता रहा, और प्रार्थना करता रहा पवित्र आत्मा के बपतिस्म में और अन्य-अन्य भाषा के उपहार के लिए प्रार्थना करता था और फिर अपनी जीभ को ढीली लटका देता था और पवित्र आत्मा से कहता था की वह उसे चारों ओर घुमाए और मुझे अन्य-अन्य भाषा का उपहार दे। परन्तु कुछ भी नहीं हुआ।

आखिरकार- अन्य-अन्य भाषाओं का उपहार :

एक रविवार की सुबाह, मैं बहुत बिमार था और गिरजाघर नहीं जा पाया, सो मैं अकेले झूलेदार कुर्सी पर बैठ कर सारी बातों को तोल रहा था जो अन्य भाषा से संबन्ध रखती थी और ताजुब कर रहा था की मैं कहाँ गलती कर रहा हूँ, जो मुझे उस अनुभव को पाने से रोक रही है।

भूख, दैवी प्रकाशन और विश्वास की उन्नती ने मेरे मन में कई आत्मिक दोष सिद्धियों को लाया (केवल मन के विचार नहीं):

१. मैं जानता हूँ की परमेश्वर चाहता है की मैं अन्य भाषा में बातें करूँ (१ कुरि १४:५)।
२. मैं जानता हूँ की यदि मैं आत्मा के लिए माँग करूँ तो, वह मुझे सर्प तो नहीं देगा, परन्तु वह मुझे वही देगा जो मैं उस से माँगता हूँ (मत्ती ७:७-११, लूका ११:९-१३)।
३. मैं जानता हूँ की यदि उस की इच्छा के अनुसार मैं कुछ माँगू तो वह मेरी सुनता है और मुझे वह मिलता है जो मैंने उस से माँगा है (१ यूहन्ना ५:१४.१५)
४. और अब उस अदभुत चीज़ के लिए - मैं जानता हूँ की किसी चमत्कार में, एक भाग है जो परमेश्वर निभाता है और एक भाग मैं निभाता हूँ। जब पतरस पानी पर चल रहा था, यीशु ने कहा, "आओ", और पतरस के पैरों को डूबने से रोका, परन्तु वह पतरस था, जो पानी पर चल रहा था।

उस दिन कुर्सी पर झलते हुए परमेश्वर के मुझे बताया की अन्य भाषा बोलने के चमत्कार में एक भाग है जो वह निभाता है और एक भाग मुझे निभाना है। इन दो भागों को प्रेरितों के काम २:४ में बताया गया: "जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य भाषा बोलने लगे।" जो भाग मुझे निभाना है वह यह है की मैं बोलने के लिए तैयार रहूँ, परन्तु मेरी स्वभाविक भाषा, अंग्रेजी मैं नहीं। परन्तु मुझे चाहिए की मैं अपनी अंदरूनी आत्मा को अक्षरों को बनाने दूँ। मैं ने आवाज को स्पष्ट करना शुरू किया, परन्तु अक्षरों का बनाना नहीं। मैं वह पवित्र आत्मा के ऊपर छोड़ देता हूँ जो मेरे अंदर वास करती है।

सो, एक विश्वास के साथ बुद्धि की सच्चाई में पुनरजन्म के दैवी प्रकाश जो मेरे मन में कई महीनों से पवित्र आत्मा जल रहा था, मैं ने एक बार फिर प्रार्थना करी और परमेश्वर से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और अन्य भाषा बोलने का उपहार माँगा। परमेश्वर के वचन को मानते

हुए, जो पवित्र आत्मा ने मुझ पर प्रगट किये थे, ध्यान पूर्वक अक्षरों को बनाए बिना ही, मैं ने बोलना शुरू कर दिया। यकीनन मैं कुछ बोल रहा था। परन्तु क्या? मुझे इस सवाल के दो जवाब मिले। मेरा विवेकी दिमाग ने हर अक्षर को तौल कर मुझे बताया की मैं अर्थरहित शब्द बोल रहा हूँ। मेरे मन ने माना की यह अन्यन्य भाषा है। मैं पवित्र आत्मा की आवाज को अपने भीतर सुनना चाहता था।

मैं एक ऐसे मोड़ पर पहुँच गया था, जहाँ मैं परमेश्वर के साथ घनिष्ट परिचय बनाना चाहता था और उस की ताकत का अनुभव करना चाहता था, मैंने यह निर्णय लिया की, मैं स्वतंत्रता से, अगले दो हफ्तों तक कोशिश करता रहूँगा। इसी बात को बार बार दौहराता रहूँगा। मैंने पाया की जब भी मैंने अपने विवेकी दिमाग को अन्यन्य भाषा बोलने के अनुभव को आँकना चाहा, वह सारे क्रम को रोक देता था। वह हर अक्षर जो मेरे मुँह से निकलता था, उसे आँक कर कहता था "यह मूर्खता है यह कोई भाषा नहीं। यह मुझे आध्यात्मिक तौर से नहीं सुधारता।" मुझे मेरे विवेकी दिमाग को कई बातों को याद दिलाना पड़ता था: पहले, हर भाषा जो वह नहीं समझता वह मूर्खता है और हो सकता है की वह और किसी भाषा को नहीं पहचान पाए यदी पहचाना हो तो। इस के अलावा, बाईबल इस बात को स्पष्ट करती है की अन्यन्य भाषा बोलने का मतलब, अपने दिमाग को आध्यात्मिक तौर से सुधारना नहीं है, परन्तु, मेरी आत्मा को आध्यात्मिक तौर से सुधारना है। (१ कुरि १४:१-४, १४)

सो, मेने अपने बायें दिमाग से कहा की वह कुछ ठोस कार्य करे और जब मैं अन्यन्य भाषा बोलूँ तो वह स्तूती और आराधना के विचारों को सोचे। यह बहुत हद तक मददगार हुआ, क्योंकि अब मेरा दिमाग मेरे मन के साथ मिल कर, बजाए पीछे हटने के, राजा की आराधना कर रहा था और अन्यन्य भाषा का बहाव, और तीवर बन गया और आसानी से मेरे जीवन में आने लगा। परन्तु, मेरा डर और विवेकी विचारों ने मुझे एक साल तक, सामूही स्थीती में अन्यन्य भाषा में प्रार्थना करने से रोकते रहे। मैं शक और विवेकता में कैद हो गया था। मैं आत्मिक रूप से विकलांग बन चुका था। मेरे इस विवेकी बंधन को देख कर आप समझ जाएँगे की आज मैं इसे के इतने खिलाफ क्यों हूँ। विवेकता ने मुझे कई सालों तक परमेश्वर के करीब जाने से रोका। मेरी उत्तेजना है की, हमारे समाज में, इस की शक्ति को तोड़ देना चाहिए, ताकी लोग स्वतंत्रता पूर्वक, परमेश्वर को आत्मा से आत्मा के स्तर पर अनुभव कर सकें।

पहली बार जब मैंने स्वतंत्रता से सामूही तौर पर अन्यन्य भाषा बोली वह थी एक घरेलू सभा में। हम एक व्यक्ति को शैतानों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थना कर रहे थे और सारा समूह आराधना में लगा हुआ था। जब हम नम्रता और सहज भाव से आराधना कर रहे थे, तो मैं ने अन्यन्य भाषा में आराधना करी। मैं बाद में एक लड़की को घर ले जा रहा था जिस ने अपना समय दक्षिण अमेरीका में बिताया था और वह पोरतुगली जानती थी। उस ने कहा की जब मैं

आज रात अन्य अन्य भाषा बोल रहा था, तो उस ने सुना की मैं पोरतुगली में कह रहा था, "हुर्रे! यीशु सदा जीवित रहे"।

मैं अचम्बित हो गया। मैं ने यह कभी नहीं सोचा था की कोई मुझे अन्यन्य भाषा में बोलते हुए सुनेगा और उसे किसी विदेशी भाषा में अनुवाद करेगा। क्या मेरे साथ परमेश्वर अच्छा नहीं कर रहा था? यह जान कर की मैं किन विवेकी शको के साथ बड रहा था और मुझे उन पर विजय पानी थी। उसने मुझे यह अचम्बित विश्वास दिलाया की हाँ, यह बडबडाते अक्षर जिन्हें मैं बोलता हूँ वह पवित्र आत्मा का बहाव था मेरे मन में और वह कोई बच्चो की बात नहीं थी। वे विदेशी भाषा थी जिन्हें समझा, और अनुवाद किया जा सकता था।

विश्वास और बहाव के सिद्धांतों को प्रचार करना :

जब मैंने आत्मा की दुनिया में प्रवेश किया, तो मैं ने क्या सीखा, मैं अपने आप को किस तरह परमेश्वर को सौंपूँ, ताकी वह मुझ से अन्यन्य भाषाओ में बात करे? मैंने दो बुनियादी सिद्धांतों को अपने जीवन मे डाला: विश्वास का सिद्धांत और बहाव के सिद्धांत को। मैं जान बूझ कर इन दोने सिद्धांतों को पहली बार अपने जीवन में, एक साथ इस्तेमाल कर रहा था।

१. विश्वास का सिद्धांत (इब्रनियों ११:६)
२. बहाव का सिद्धांत (यूहन्ना ७:३८,३९)
३. "बहाव में विश्वास" का सिद्धांत

विश्वास में, अपनी बाहारी आन्तरिक शक्तियों को बहने दो।

उदहारण के लिए :

- * दिमाग ने अपने आप को पवित्रात्मा के बहाव के आधीन किया = आभिषिक्त विचार, बुद्धिमानी के शब्द, ज्ञान के शब्द।
- * मुहँ ने अपने आप के पवित्र आत्मा के बहाव के आधीन किया = आन्यन्य भाषा, मतलब समझना, भविष्यवाणी, भाषा की हुदयग्रहिता.
- * मन ने अपने आप को पवित्र आत्मा के बहाव के आधीन किया = परमेश्वर की आवाज़, विश्वास, शांती, बेचैनी की आत्माओं को पैहचानना।
- * हाथों ने अपने आप को पवित्र आत्मा के बहाव के आधीन किया = चमत्कार, चंगाई।
- * आँखों ने अपने आप को पवित्र आत्मा के बहाव के आधीन किया= स्वपन, दर्शन, दैवी दृष्य।

विश्वास के सिद्धांत का एक परिचय :

इबनियों ११:६ कहता है की, विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है और मुझे विश्वास करना है की वह है और यदि मैं उसे खोजूँ तो वह मुझे प्रतिफल देगा। सो, वह चीज़ जो परमेश्वर को खुश करती है वह यह है की मैं उस पर विश्वास करूँ की वह यहाँ मेरे साथ है और वह मुझ से प्यार करता है और मार्गदर्शन करता और संभालता और मुक्ति देता और मुझ से बात चीत करता है। कई सालो तक मैंने परमेश्वर को यह प्रसन्नता नहीं दी की, मैं उस पर विश्वास करता हूँ क्योंकि मेरा विश्वास जो वितरण और विवेकी ईश्वरज्ञान मे था उस ने मेरे जीवन से परमेश्वर की तत्कालीनता को दूर कर दिया था। अब, आखीरकार, मैं उसे प्रसन्नता दे सकता हूँ, इस बात पर विश्वास कर के की वह है और जैसे जैसे मैं उस को ढूँढता हूँ, वह मुझे प्रतिफल देगा ।

असली में यह परमेश्वर का विश्वास है (मरकुस ११:२२ - यूनानी में) हमारा विश्वास नहीं,

जो हमारे भूखे, खोजते मनो में पैदा होता है। बाईबल कहती है की सुनने से विश्वास उत्पन्न होता है और वचन को सुनना (यूनानी में रेहमा जिस का मतलब है "कहा हुआ शब्द") मसीह से (रोम १०:१७) यह वचन हमें इस बात को बताता है की विश्वास तब उत्पन्न होता है जब परमेश्वर, ज्ञान को दर्शा कर, तुम्हारे मन से बात करता है। इस दैवी प्रकाशन का नतीजा (पवित्र आत्मा में बपतिस्मा के संदर्भ में) यह है की आप एक आत्मिक विश्वास के साथ, एक दिली तसल्ली और दैवी निश्चय से जान लें की आप ने अन्यन्य भाषा का उपहार पाना है और आप अन्यन्य भाषा का उपहार पा सकते हैं और यह की आप अन्यन्य भाषा का उपहार पाएंगे यदि आप, एक अच्छे परमेश्वर से उसे माँगेंगे और हमेशा विश्वास में बोलेंगे।

प्रार्थना करीए की परमेश्वर आप के मन में दैवी प्रकाशन डाले। परमेश्वर से कहीए की वह आप को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा से सम्बंधित आयतो पर आप को आत्मिक समझ दे और अन्यन्य भाषा में बोलने का उपहार भी दे। फिर प्रार्थना पूर्वक उन पर ध्यान लगाईए। उस से यह भी कहीए की वह आप को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा के विश्वास का उपहार दे और अन्यन्य भाषा बोलने का उपहार आप के मन में दे। फिर इस नाव पर से विश्वास के साथ उतरीए, इस विश्वास के साथ की परमेश्वर आप को मिलेगा एक दैवी चमत्कार के साथ।

बहाव के सिद्धांत का एक परिचय :

यूहन्ना ७:३८,३९ में पवित्र आत्मा को यीशु एक नदी के रूप में दर्शाते हैं जिस का 'बहाव' हम अनुभव करते हैं। मैंने मेरे अन्दर के बहाव का कभी आदर नहीं किया। मैंने बहाव के बारे में कभी पढ़ाई नहीं की न उसे कभी तोला या बहाव के आध्यात्माविद्या के प्रभाव को कभी समझा। कालेज में यथाक्रम ईश्वरविद्या के पाठ में हम ने बहाव को एक शिक्षा के रूप में कभी नहीं पढ़ा। बहाव का विचार मुझे नहीं मिला, परन्तु १९७९ में परमेश्वर ने मुझे सिखाया की "बहाव" या "स्वैच्छिकता", जैसे की मैं उसे कहता हूँ, एक रास्ता है जिस के कारण हम हमारे अंदर जो परमेश्वर की नदी है, उस का अनुभव करते हैं और यह चार मुख्य बातों में यह एक बात है जिसे मुझे सीखना है ताकी मैं अपने मन में उस की आवाज सफाई से सुन सकूँ।

जब मैं अन्यन्य भाषा बोलता हूँ, मैं बोलता हूँ, परन्तु अक्षरो को मैं सचेत हो कर नहीं बनाता। मैं बहाव की ओर ध्यान देता हूँ और उन अक्षरों को बोलता हूँ जो मेरे दिमाग में सचेतता से नहीं आते परन्तु स्वैच्छिकता से आते हैं, पवित्र आत्मा का बहाव जो मुझ से कहता है, उस के कहे अनुसार। मेरे मुँह से वाक्य (अक्षर) अपने आप निकलते हैं। मैं एक बच्चे के जैसे विश्वास से बोलता हूँ। एक आत्मिक दृढ़ विश्वास बढ़ता है की यह अक्षरों का बहाव मेरे अंदर की पवित्र आत्मा की नदी से आत्मिक रहा है। परमेश्वर की अनुग्रह सीधे मेरे मन पर आती है, जिस से

दैवी विश्वास प्राप्त होता है जिस के बिना उस से कुछ भी पाना ना मुमकिन है। (याकुब १:६,७)

स्कूल और कालेज में मुझे बहाव को तिरस्कार करना सिखाया, इस कारण शुरू के कुछ महिनों तक मुझे अन्यन्य भाषा के उपहार को आदर करना और विश्वास करना और इस्तेमाल करने में मुश्किल हुई। परमेश्वर के अनुग्राह से, मैं धीरे धीरे उस स्थान पर पहुँचा हूँ जहाँ मुझे पता चला है की बहाव मेरे अन्दर का पवित्र आत्मा है और मेरा प्रचलित अंगीकार यह है, "मैं बहाव का आदर करता हूँ क्योंकि वह मेरे अंदर परमेश्वर की आत्मा की नदी है"। मैं चाहता हूँ की आप भी इस विश्वास को माने और इसे अपना अंगीकार बनाए। अभी इसी वक्त, कई बार अंगीकार करीए।

यदी आप अपने पापों का पश्चताप, इस बात को कह कर करें, तो यह बिलकुल भी कठिन न होगा, मैं अपने इस विश्वास के लिए पश्चताप करता हूँ की बहाव कुछ भी नहीं है और इसे तुच्छ समझ कर अलग रख दिया जाए। मैं इस विश्वास से हटता हूँ और मैं परमेश्वर के वचन की सच्चाई को मानता हूँ की परमेश्वर की नदी मेरे अंदर बहती है और जब मैं अपनी आँखें, यीशु पर लगाऊँगा और बहाव पर ध्यान करूँगा तो जो विचारों और चित्रों की नदीयाँ बह उठती है वह मेरे अंदर जो परमेश्वर की आत्मा है, उस मे से आती है। इसे अपनी प्रार्थना बना लीजीए और अपना पश्चताप और इस के कारण आप अपने विवेकी परमेश्वर से मुक्त हो जाएंगे जीसने पश्चीमी दुनिया को ५०० वर्षों से जकड़े रखा है।

तेईस साल का अनुभव इस से पहले की सिद्धांतों को सपष्ट करूँ :

दुर्भाग्य से, जब मैंने पहली बार विश्वास के बहाव के सिद्धांत का उपयोग कर, १९७५ में, मैंने अन्यन्य भाषा बोलने में इस का उपयोग किया, तो उस वक्त पूर्णरूप से मैं इसे समझ नहीं पाया था और न ही बता पा रहा था। और २३ साल लग जाएंगे इस से पहले की मैं इसे कागज पर लिख सकूँ और उस को सम्पूर्ण रूप से, पवित्र आत्मा के अन्य उपहारों के साथ प्रयोग करूँ। क्योंकि यही विश्वास के बहाव का सिद्धांत, पवित्र आत्मा के अन्य उपहारों को प्रयोग में लाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

कई वर्षों से ओरल रॉबर्ट्स, इस विश्वास के बहाव के सिद्धांत को पढ़ाते आ रहे हैं, लोगो को प्रोत्साहन देते थे की वे पहले अन्यन्य भाषा में प्रार्थना करें और बाद में अंग्रेजी में प्रार्थना करें। वे मानते हैं की जो अंग्रेजी में आप प्रार्थना करते हैं, वह अन्यन्य भाषा का अनुवाद है। मैं यह कहता हूँ की, यदि आप अन्यन्य भाषा से अंग्रेजी में जाएँ, तो आप उस बहाव में बने रहते हैं जो अन्यन्य भाषा बोलते में बना रहता है, सो तब वह अंग्रेजी, अन्यन्य भाषा का अनुवाद होगा और इस प्राकर भविष्यवाणी के अनुरूप होगा।

कुछ समय निकाल कर, जो कहा गया है उस के विषय में सोचें, ताकी आप दबाव बना सकें और पवित्र आत्मा के उपहारों को उपयोग करना सीखें, यदी आप चाहते हैं तो, परन्तु अपने अंदर के परमेश्वर की नदी में अपने बाहरि प्रभाव को बहने दें। एक बार जब परमेश्वर आप को इस बिषय पर दैवी प्रकाश दें तो आप आलौकिक में कार्य करना शुरू कर देंगे। इस बात को मत टालीए। रुक कर सोचीए और ध्यान लगाईए और इस दैवी प्रकाश को पाईए। आप का जीवन तो चलता रहेगा यदी आप इस दैवी प्रकाश का उपयोग करें या नहीं। परन्तु यदी आप इसे प्राप्त कर इस में जीवन बितीते हैं, तो आप आज की दूनिया में पवित्र आत्मा की शक्ति के आलौकिक स्पष्टता बन जाओगे। यदि नहीं, तो आप केवल स्वयं की स्पष्टता बनेंगे। संसार को मसीह की आवश्यकता है, आप की नहीं।

जब आप पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेते हैं, तो क्या होता है, इस विषय पर, अध्यात्माविध्या सम्बंधी कुछ समझ :

मेरी समझ में यह तीन वाक्य खण्ड जो आपस में बदले जा सकते हैं: पवित्र आत्मा में बपतिस्मा, पवित्र आत्मा से बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा के द्वारा बपतिस्मा "में", "से" "द्वारा" ये सब यूनानी "एन" के स्वीकृत अनुवाद हैं।

इस अनुभव में, कई चीज़ें होती हैं। पहले, यह प्रत्यक्ष है की जब आप पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेते हैं तो आप पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। यह प्रेरितो के काम दो में सच हुआ। प्रेरित १:५ कहता है की वे पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाएंगे, और जब प्रेरित २:१-४ में ऐसा हुआ तो बताया जाता है की वे पवित्र आत्मा से भर गए। अब यह भराई आप के जीवन में कई बार होनी चाहिए, परन्तु आप पवित्र आत्मा में एक बार बपतिस्मा लेते हैं। इस बात पर ध्यान दीजिए की वही लोग जो प्रेरित २:४ में पवित्र आत्मा से भरे थे वही दुबारा फिर से प्रेरित ४:३१ में भी भरे गए। हालांकी इस बात का कहीं पर भी लेखा नहीं है की उन्होंने फिर से पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लिया।

निमन दिए गए बाईबल के संदर्भ हमें पवित्र आत्मा से भरे रहने के बारे में बताते हैं।

लूका ३१:३-५, ३५:३१-३५, व्यवस्था विवरण ३४:९, मिका ३:८, लूका १:१५, १६, ४१, ४२, ६७; प्रेरित २:५, ४:८-१२, ३१; ९:१७; १३:९, १०, ५२; इफीसियों ५:१८-२१।

यह वचन बताते हैं की पवित्र आत्मा में पूर्णता हमें देती है: दैवी ज्ञान और समझ; अपने कार्य में अभीषेक; पवित्र आत्मा के निर्देश में भविष्यवाणी करना; अभिषिक्त मन के एहसास (उदहारण, आप के कार्य के प्रती अत्तेजना); अभिषिक्त मन के भावों के लक्षण (उदहारण, हिम्मत, विश्वास और अभिषिक्त मन के ढंग (उदहारण, प्रसंता, धन्यवाद)।

आप पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं जब आप ध्यान लगाते हैं और आप के अंदर वास करने वाली पवित्र आत्मा जो परीपूर्ण हो गयी है, उस के बहाव को मुक्त करते हैं और आप के मन को बलशाली बनाते हैं और आप के दिमाग, इच्छा, भावों, बोल और हाथों को अभिषिक्त करता है, जब आप उन्हें परमेश्वर की नदी के बहाव के अनुसार चलाते हैं।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा आप को इस से एक कदम और आगे ले जाता है इन निम्न दिये गए चीजों को आप की अनुभव सूची में जोड़ कर जो आप को पवित्र आत्मा से भरे रहने पर मिलते हैं : अन्यन्य भाषा, अन्यन्य भाषा का मतलब, चंगाई देने का उपहार और चमत्कार करना।

पवित्र आत्मा से भरे जाने पर आप ने सीखना शुरू किया है की आप अपनी आत्मा के बाहारी कार्यों को अंदरूनी आत्मा के आधीन कैसे करते हैं, और जहाँ तक पवित्र आत्मा में बपतिस्मा में आप एक कदम आगे जाते हैं (यानी जहाँ तक विवेका का सवाल है आप जीवन के उन्मत्त और ऊटपटांग तरफ को पूर्ण रूप से देखेंगे) और अपनी जीभ को जबरदस्ती अन्यन्य भाषा बोलने के लिए करेंगे। यह आप की विवेका को पूर्ण रूप से मुक्त करना और छोड़ कर दैवी बहाव या ज्ञान के दैवी प्रकाशन की ओर जाना ही वह बिन्दु है जहाँ परमेश्वर जान जाते हैं की आप ने उन के रास्तों को अच्छी तरह सीख लिया है और आप को एक आधीक शक्ति दी जा सकती है। तो पवित्र आत्मा आता है और आप पर वास करता है एक खास आलौकिक अभीषेक के साथ जिसे आप मसीही समीति में उपयोग कर सकते हैं।

मैंने पाया की पवित्र आत्मा में बपतिस्मा में दो खुबसूरत चमत्कार हुए। पहला, मेरे बाहारी कवच ने गहरी मृत्यु और पुनर जन्म पाया और दूसरा, परमेश्वर ने उच्चतम शक्ति मुझे प्रदान की। आप देखें की मैं अपनी आत्मा की इंद्रियों पर स्वयं काबू करते हुए बड़ा हुआ हूँ। मैं ने अपने विचारों, बोलचाल, भावनाओं वगैरह पर काबू किया। बैसे भी, बाईबल कहती है की जब तक एक गेहूँ का दाना भूमी पर गिर कर और मर जाए वह अकेला ही रहता है। एक बार वह मर जाए, तो वह अधिक फल लाता है (यूहन्ना १२:२४)। एक बार बाहारी कवच मर जाए, तो जो आप के अंदर पवित्र आत्मा है वह उछल कर आगे आता है।

जब तक मैंने अपने आत्मा की इंद्रियों के स्वयं स्वार्थ को नहीं मारा, तब तक मैं अकेले

और फलरहीत ही रहा। जब मैंने स्वयं पर काबू करने के बजाए आत्मा को काबू करने दिया तो मैं एक दम से फलों से भर गया। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा ने एक महात्वपूर्ण कार्य किया, जब मैंने अपनी जीभ के काबू को पवित्र आत्मा परमेश्वर छोड़ दिया, और उस से कहा की वह मुझे अन्यन्य भाषा बोलने का उपहार दे।

यीसु ने खुद, अपने कार्यों पर स्वयं काबू को मारा। उन्होंने अपने आप कुछ नहीं किया, परन्तु वही जो उन्होंने अपने पिता को करते या कहते हुए सुना या देखा (यूहन्ना ५:१९,२०,३०; ८:२६,२८,३८)।

पवित्र आत्मा के दूसरे गुणों के बारे में भी यीशु मसीह ने दर्शाया। अपने बपतिस्मा के समय जो उन्होंने यूहन्ना से पाया, पवित्र आत्मा एक कबूतर के रूप में उन के ऊपर उत्तरा और उन पर ठहर गया (मरकुस १:८-११, यूहन्ना १:३२,३३)।

मैं मानता हूँ की स्वयं पर काबू को छोड़ कर आत्मा के काबू को सौंप देना, सिक्के का एक तरफ है और पवित्र आत्मा का ठहरना और किसी को शक्ति से परीपूर्ण करना, सिक्के का दूसरा पहलू है।

एक तरफ, आत्मा एक खास रास्ते से हमारे अंदर से बह कर निकलता है जब हम अपनी जीभ को अंदर बास कर रही आत्मा को सौंपते हैं, हम विवेकी परमेश्वर से हट कर दैवी ज्ञान के परमेश्वर की ओर जाते हैं। दूसरी तरफ, एक नया दैवी पन है जो विश्वासी पर ठहर जाता है। मैं सोचता हूँ की क्या यह परमेश्वर कह रहा है की, "अब क्योंकि मैं देख रहा हूँ की तुम ने स्वयं को मेरे आधीन पूर्ण रूप से सौंप दिया है, तो अब जो भी कार्य तुम करते हो उस में मैं तुम्हे अधिक स्तर की शक्ति और अधिकार और अभीषेक देता हूँ।" मैं सोचता हूँ की यही सब होता है।

सो हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का दूसरे भाग के अनभव के बारे में बात करते हैं - यह हमेशा की शक्ति जो आप उच्च पवित्र आत्मा से पाते हैं और जो आप पर वास करता है एक नये और अनोखे तरीके से।

और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठरहे रहो" (लूका २४:४९)।

यह सामर्थ कई मुख्य नतीजे देती है, हमारे जीवन में।

(लूका ४:१८,१९) "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुआँ को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।"

(प्रेरित १०:३८) "परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया, वह भलाई करता और सब को जो शैतान के समाए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"

(१ यूहन्ना २:२०,२७) "परन्तु तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो। जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।

यह दैवी सामर्थ्य यीशु के द्वारा उसके चलों को कई बार प्राप्त हुई। (मत्ती २८:१८-२०; मरकुस १६:१७-१९; लूका ९:१,२; १०:१७,१९; प्रेरित १:५, ८; २:१-४)।

सो यह दैवी सामर्थ्य शक्ति के साथ मिल कर हमें अभिषिक्त करती है हमारे प्रचार में और उपदेश में, दैवी चंगाई में, दोनो भावों की और शारिरिक देह की और शैतानों को निकालने की और एक अंदरूनी साक्षी प्रधान करती है ताकी हम जान सके की क्या सही है और क्या गलत।

मैंने कई सालों में इन चीज़ों को अनुभव किया है और वे भी करेंगे जिन्होंने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाया है। मैं मानता हूँ की वह तत्व जो पवित्र आत्मा हमें देती है की हम इन कार्यों को करे, उन की सूची १ कुरिंथियों १२:७-११ में दी गयी है और इन्हे "पवित्र आत्मा के वरदान" कहा गया है।

जब हम सीख जाते हैं की अपनी इंद्रियों का नियंत्रण उसे करने दें, तो, पवित्र आत्मा हमें नौ वरदानों के द्वारा वास करता है, ।

नौ वरदान हैं (कार्यों के अनुसार)

बुद्धि की बातें - बुद्धि जो विचारों के बहाव से आती हैं।

ज्ञान की बातें - ज्ञान जो विचारों के बहाव से आता है।

विश्वास -मन के अंदर दैवी अनुभव के द्वारा मिलता है।

चंगा करने का वरदान - अभीषेक के द्वारा आलौकिक शक्ति का मुक्त होना।
सामर्थ के काम करने की शक्ति - अभीषेक के द्वारा आलौकिक शक्ति का मुक्त होना।
भविष्यवाणी - पवित्र आत्मा के बहाव में बोले गए शब्द।

आत्माओं में भेद - अंदरूनी साक्षी जो शैतान की प्रस्तुती का आभास दिलाती है।

अन्य अन्य भाषा के प्रकार - पवित्र आत्मा के बहाव में बोले गए, बिना सीखे हुए शब्द।

अन्य अन्य भाषा का अनुवाद - पवित्र आत्मा के बहाव में बोले गए शब्द।

ये योग्यताएँ हर मसीही के लिए उपलब्ध हैं जो नम्र हृदय रखते हों और अपनी आँखें यीशु पर टिकाए रखते हों (मत्ती ५:५; इब्रा १२:१,२)। यदि आप प्रेरितों के काम पुस्तक को पौलुस के परिवर्तन के बाद से ध्यान से पढ़ें (प्रेरित ९-२०), तो आप देखेंगे की पौलुस में उपर्युक्त सारे नौ पवित्र आत्मा के वरदानों की स्पष्टता थी। मैं विश्वास करता हूँ की हम भी ऐसा कर सकते हैं, यदि हम पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ को सुनें। अन्य अन्य भाषा बोलना और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा, शुरुआती कदम है, पवित्रात्मा से अभीषिक्त जीवन के अदभुत जीवन का। जब तक आप पवित्रात्मा को पूर्ण रूप से पाना लें, तब तक कोशिश करते जाईए और आप जब तक पवित्र आत्मा में फलवंत हो देशों को चंगाई नहीं दे सकते।

आखिर में, यदि आप जानना चाहते हैं की कौन से विज्ञान शास्त्र ने अन्य अन्य भाषा के बारे में जाना है, तो यह कुछ दिलचस्प परिज्ञान हैं।

वैज्ञानिक प्रयोग शाला में किए गए प्रयोग बताते हैं, जब कोई व्यक्ति अन्य अन्य भाषा में बोलता है तो दिमागी लहर कार्य इसे दिमाग के दाहिनी ओर लिखता है। दाहिने दिमाग के दूसरे कार्य हैं दर्शन, अंतरज्ञान, शिल्प कला का ज्ञान और संगीत। मैं स्वैच्छिक रूप से इस बात को स्पष्ट कर सकता हूँ की अन्य भाषा में प्रार्थना करने से मैं, दार्शनिका, परमेश्वर की नम्र अंदरूनी आवाज़ शांती और शक्ति की ओर खुल जाता हूँ।

वैज्ञानिक शिक्षा ने इस बात को खोज निकाला है की अन्य भाषा में बोलने से आक्रमण से मुक्त क्रम को बनाता है। इस का कोई बुरा असर नहीं होता, खास तौर पे तब, जब पिछले बीस वर्ष में अमरीका के आक्रमण से मुक्त क्रम में ३०% गिरावट हुई है। यह एक रास्ता हो सकता है की परमेश्वर अपने गिरजाघर से सेहत की वाचा बनाए रखते हैं।

विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के तीन कार्यों का सारांश :

आप बचाए गए हैं, जब आप अपने पापों का पश्चताप करते हैं और यीशु को अपना परमेश्वर और मुक्तिदाता मानते हैं, एक नया मन पाते हैं और एक नयी आत्मा भी जो आप के पुराने बुरे विचारों को बदल कर आप के जीवन में सच्चुई, प्रेम और धर्म परायणता की अत्तेजना लाती है।

आप पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं जब आप, अपने अंदर वास कर रही पवित्र आत्मा की ओर और उस के बहाव की मुक्ती की ओर ध्यान लगाएँ, जो आप के मन को भरता है और बलशाली बनाता है और आपके मस्तिष्क इच्छा, भावनाओं, उपदेशों और हाथों को अभिशिक्त करता है, जब आप उन्हें अपने अंदर की परमेश्वर की नदी के बहाव में बहने दें।

आप पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाए हुए हैं जब आप अन्य भाषा में बोलने के वरदान को प्रयोग में लाएँ और पवित्र आत्मा की शक्ति को पूर्ण रूप से प्राप्त करें जो आप की मदद करती है जब आप दूसरों के लिए चंगाई की प्रार्थना, चमत्कार की प्रार्थना और पापों से मुक्ति की प्रार्थना करते हैं।

कुछ लोग इस बात पर विवाद करते हैं की पवित्र आत्मा से बपतिस्मा और पवित्र आत्मा से भर जाना एक ही प्रकार का अनुभव है। मैं समझता हूँ की ऐसा हो सकता है। इसका यह अर्थ होगा की अब तक जो इन अनुभवों के बारे में मैंने कहा उसे (बजाए दो के) एक समूह में डाल देना चाहिए, यह ज़रूरी नहीं है की मैं इन्हें दो अलग अनुभवों में बताने के लिए लड़ूँ। मुख्य बात यह है की, स्पष्टता, शक्ति और पवित्रआत्मा के वरदान आप के जीवन में कार्य कर रहे हैं। मैं बस इस बात पर ध्यान देता हूँ।

विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के तीन कार्यों के बारे में अब आप पवित्र शास्त्र में खोजेंगे :

- १. मुक्ति के समय पवित्र आत्मा**, मसीह के मन में वास करता है और पुनर जीवन प्राप्त करते हैं, एक नए मन के साथ। परमेश्वर की शक्ति, मनुष्य के साथ रहने लगती है । लिखिए की निम्न वचन इस बारे में क्या बताते हैं ।

यहेजकेल 36:26,27:

1 कुरिन्थियों 6:17

रोमियों 8:9

रोमियों 8:5

मुक्ति के समय, आप के मन में एक गहरा बदलाव आता है। आप, पवित्रात्मा के द्वारा जो आप के अन्दर वास करता है, अपनी आत्मा में एक गहरा दैवी स्वाभाव पाते हैं (II परतस् 1:4), और "आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सनतान हैं. (रोमि 8:16)। मुक्ति के समय आप एकदम से मन में एक दैवी बदलाव का अनुभव करेंगे। आप की पाप करने की इच्छा खत्म हो जाएगी ।

यह अंदरवास कर रही पवित्र आत्मा के कार्य की एक शुरुआत है। यह बीज, जो आप के अंदर गड़ा हुआ है, यह उग कर बढ़ा होना चाहता है, जब तक ये आप को पूर्ण रूप से जकड़ ना ले। इस तरह, आप "अंदरूनी शक्ति" को बाहर आने के कार्यों की शुरुआत करते हैं (फिल २:१२,१३) यह हमें, दूसरे रास्ते की ओर लाता है जिसे पवित्र आत्मा आप के जीवन में कार्य करना चाहता है ।

२. **पवित्र आत्मा में बपतिस्मा**, एक दिशा खुलने का अनुभव है, जहाँ, विश्वास की प्रार्थना में, आप अपने प्राणों के कार्य करने के ढंग को, नम्र, अंतर्ज्ञान, स्वैच्छिक, आप के अंदर वास कर रही आत्मा के प्रभावों को सौंपते हैं, अपनी आत्मा की शक्ति को प्राणों की इंद्रिया के साथ जोड़ते हुए, नए और उत्तेजक दिशा पा सकें। यह अंदरूनी बहाव के लिए रास्ता खोलता है और इस कारण इसे अधिकारी का अनुभव कहते हैं। इसे पवित्र आत्मा में बपतिस्मा इसलिए कहते हैं क्योंकि, परमेश्वर ही पवित्रात्मा को आपके ऊपर ठहरने को कहता है, ताकी आप उस की सेवा करने के लिए खास शक्ति पा सकें । लिखिए की निम्न दिए गए वचन, पवित्रात्मा में बपतिस्मा के बारे में क्या कहते हैं ।

लूका 3:16.

प्रेरित 1:8

प्रेरित 2:1-4

हम देखते हैं की यीशु अपने चेलो को पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा का चोगा पहना कर ताकत देना चाहता था, ताकी वे गवाह बनें, जो प्रेरितो के काम २ के बाकी के वचनों में सही हुआ। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा, एक अधिकार का अनुभव है, ताकी आप उसकी सेवा के लिए तैयार हो जाएं। यह अंदर वास कर रही आत्मा के जैसा नहीं है जो मुक्ति के वक्त होता है, जो हम निम्न बाईबल के उदाहरणे के द्वारा देखेंगे ।

यूहन्ना : 7:38, 39 में, यीशु हमें जीवन के जल की नदीयों के बारे बताते हैं, जो विश्वासी के हृदय से निकलेंगी। यीशु ने कहा की यह - नदीयाँ पवित्रात्मा हैं। यीशु जब महीमा पा चुके, तब उन्होंने चेलो से भेंट की और उन पर फुँका, ताकी वे पवित्रात्मा पा सकें (यहन्ना २०:२१,२२)। उस वक्त चेलो ने पूणर जन्म पाया। जीवन के जल की नदीयाँ उन के हृदयो से बहने लगीं। मनुष्य को मुक्ति मिली। चालीस दिनों के बाद (प्रेरित 1:3) .यीशु चेलों को एकत्रित किया ताकी वे पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पा सकें, (प्रेरित 1:5), जो की दस दिनो बाद प्रेरित 2:1-4 में पूरा हुआ। इस तरह हम देखते है की अंदर वास कर रही आत्मा और बपतिस्में की आत्मा एक ही अनुभव नहीं हैं ।

हम देखते हैं की पवित्र आत्मा में बपतिस्मा अन्य अन्य भाषा बोलने से सम्बंध रखता है जैसे के प्रेरि 2:1-4 मे हुआ। जैसे की १ कुरिंथियों 12-7-11 में बताया गया है, अन्य अन्य भाषा पवित्र आत्मा के नौ वरदानों में से एक है। यह परमेश्वर की दी गयी योग्यता है की हम दैविकता से दूसरी भाषा बोल सकें ।

अब, मैं पहले बतायी गयी बात को विस्तार से बताता हूँ। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा, राह खोलने का अनुभव है जहाँ, विश्वास की प्रार्थना के द्वारा, विश्वासी अपने प्राणों के कार्यों को नम्र अंर्ज्ञान, स्वैच्छिक अंदर वास कर रही आत्मा के प्रभावों को सौपता है, अपनी आत्मा की शक्ति को, प्राणो की इद्रियों के साथ जोड़ते हुए, ताकी नयी और उत्तेजक दिशाएँ पा सकें। ऊपर बताया गया हर भाग मुख्य है।

१.यह एक राह खुलने का अनुभव है, अंत का नहीं ।

२. यह प्रार्थना और विश्वास के साथ किया गया है ।

३. इस में धर्मनिष्ठा आवश्यक है

४. आप पापों से मुक्त हो गए हो

५. आप प्राणों का नियंत्रण, आत्मा के नियंत्रण को सौंप रहे हैं ।

६. जीवन की एक नयी दिशा खुल रही है ।

७. आत्मा, नम्र, अंतर्ज्ञान, स्वैच्छिक प्रभावों के मध्य से राह दिखाती है ।

अब हम अन्य अन्य भाषा बोलने के कार्य को, प्राण नियंत्रण से आत्मिक नियंत्रण की ओर जाने का एक आसान वर्णन के रूप में जाँच करेंगे ।

आपने ध्यान दिया होगा की प्रेरितों के काम पुस्तक में, हाथ रखने से पवित्रात्मा अन्य अन्य भाषा बोलने के रूप में उतरा है। जब की यह जरूरी होगा की आप अपने विश्वास को बढ़ाने के लिए, अपने साथ किसी और को भी लें, जब आप परमेश्वर से ये वरदान माँगे, परन्तु यह आवश्यक नहीं। आप जहाँ भी, जब भी तैयार हों, परमेश्वर आप से मिलना चाहता है ।

एक धार्मिक विश्वासी, जो अपने मे आत्मा की शक्ति के बहाव को मेरे द्वारा बढ़ाना चाहता है, मैं आत्मा को प्राणों पर, नियंत्रण करने देता हूँ । मैं जानता हूँ, यदी मैं पवित्रात्मा का मुझ में बढ़ता हुआ देखना चाहूँ, तो वह मुझे एक मच्छली नहीं देगा (मेरे हाथों का कार्य) या एक साँप (शैतान का रूप) (लूका ११:११-१३).

इस तरह, मैं विश्वास में उसे खोजता हूँ । मैं जानत हूँ की मुझे उत्सुक्ता से आत्मा के वरदानों की इच्छा करनी है। (१ कुरि १४:१) और ऐसे लगता है जैसे सबसे आसान और तुरन्त उपलब्ध वरदान जैसे की पिन्तेकुस्त के वक्त बताया गया, वह अन्य अन्य भाषा बोलना है। सो मैं परमेश्वर से इस वरदान की इच्छा रखता हूँ। मुझे याद है की जब पतरस पानी पर चला तो उस ने परमेश्वर की दैवी शक्ति के साथ सहयोग किया ताकी वह उठ कर नाव के बाहर कदम रख सके, ताकी एक चमत्कार हो सके, तब उसे चलते रहना पड़ा, ताकी चमत्कार तलता रहे।

सो, विश्वास में, मैं अपने बोलने का नियंत्रण आत्मा को सौंप देता हूँ, और फिर भी चलते (बोलते) रहता हूँ, ताकी चमत्कार से भरने का अवकाश मिले। मैं मसीही अनुभव के ऐसे मोड़ पर आ खड़ा होता हूँ, जहाँ से मेरे आत्मिक जीवन में और कई रास्ते निकलेंगे। मैं विश्वास पर यकीन कर रहा हूँ की परमेश्वर की अंदरूनी शक्ति दैवी स्पष्टता में वह निकलेगी जब मैं अपनी योग्यताओं को उसे सौंप दूँगा। इस विश्वास के पल में, या तो वह मुझे मिलेगा और वह जो कहता है की वह है वह होगा या मैं एक बेवकूफ बन जाऊँगा जो बच्चों की तरह बकवास करता रहता है। विश्वास से भरे हुए समर्पण में, मैं अपनी जीभ का नियंत्रण अपने प्राण से आत्मा को सौंपता हूँ और विश्वास में बोलते रहता हूँ, इस बात के यकीन के साथ की वाक्यों पर मेरा नियंत्रण नहीं है, बलकी मैं उस की ओर ताक रहा हूँ, वह मुझ पर काबू पाएगा और उन्हे नम्र मार्गदर्शन के द्वारा बनाएगा। मैं यह बिल्कुल नही ध्यान देता की वह है, परन्तु जैसे ही मैं प्राण का नियंत्रण अलग करता

हूँ और अपने जीभ का नियंत्रण आत्मा को सौपता हूँ, तो मैं पाता हूँ की मेरी चेतना में एक आत्मा की उपस्थिति और ताकत की उन्नति का ज्ञात होता है। क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह परमेश्वर से बातें करता है..... वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है.... अपनी ही उन्नति करता है।" (१ कुरि १४:२,४)

सो, अन्य भाषा में बोलना, जो एक विश्वास के कार्य के रूप में शुरू होता है, वह अब अंदरूनी आत्मा की नम्रता से चलने लगता है। एक बार जब अन्य भाषा का यह बिल्कुल ही सामान्य क्षेत्र बन जाता है, तो इसे जारी रखा जा सकता है और बाकी के पवित्र आत्मा के नौ वरदानों में पुष्ट किया जा सकता है (१ कुरि १२:७-११)। यह अन्त नहीं है, परन्तु सच्चाई में शुरुआत है, आप के जीवन की नयी दिशाओं की, जो आत्मा के भरे जाते रहने पर बना रहता है। (इफी ५:१८)

आप याद कर सकते हैं की, मुक्ति के वक्त आत्मा आप में वास करती है, आप पर ठहरती है जब बपतिस्मा लेते हैं और अब अन्तिम अनुभव में आप को लगातार भरते रहता है।

३. पवित्रात्मा का लगातार भरे रहना

लिखिए इफीसियों ५:१८

यूनानी में यह वचन, आज्ञासूचक भाव में है, जिस से यह एक आदेश बन जाता है, इच्छा नहीं। यह वर्तमान निरन्तरता काल में है जिस से यह निरन्तरता बन जाती है या दोहराने वाला कार्य। यह कमवाच्य में है, जिस का अर्थ यह है की आप पर कुछ हो रहा है (पानी भरे जाना)।

यह पवित्र आत्मा से भरे जाने का अनुभव एक आदेश है, पवित्र आत्मा आप पर कार्य करे इस अनुभव का दोहराना। इस वचन के पहले भाग के संदर्भ में, बजाए इसके की आप स्वयं को दाखरस के नियंत्रण में सौंप दें आप अंदर वास कर रही, चमकती आत्मा को नियंत्रण सौंपें। इसलिए "परिपूर्ण" का अर्थ पेन्तेकोस्त के अनुभव के लिए भी इस्तेमाल होता है (प्रेरित २:४)।

परन्तु, जब बाईबल मुक्ति या पवित्र आत्मा में बपतिस्मा के बारे में बोलती है तो वह अनिश्चित काल - सूचक भूतकालिक क्रिया का उपयोग करती है (यूहन्ना ३:३) प्रेरित

१:५,१०:४५)। अनिश्चित काल सूचक भूतकालिक क्रिया का अर्थ है की "कुछ कार्य जो भूतकाल में हुआ हो जिस का नतिजा भविष्य काल तक चला आ रहा हों"। उदाहरण के लिए, मुक्ति के समय आप एक बार पुनर जन्म लेते हैं और यह कार्य आप के जीवन भर चलता रहता है। यह पवित्रात्मा में बपतिस्मा के लिए भी सच है। आप एक बार बपतिस्मा लेते हैं परन्तु यह परिवर्तन जीवन भर आप के साथ रहता है। परन्तु, जो पल पल का भरना है, यह लगातार चलते रहने वाला कार्य है। इसे प्रेरित ४:३१ में बताया गया है, जब पतरस और यूहन्ना दुबारा परिपूर्ण हुए, नयी ताकत पाई, ताकी सामने जो कार्य है उसे कर सकें।

इसलिए, पवित्रात्मा में बपतिस्मा आप के जीवन में पवित्र आत्मा के तीन में से एक अनुभव है, और यदि आप लगातार परिपूर्णता में नहीं लगे रहते तो यह आप को एक न खत्म होने वाली स्थिती में छोड़ देगा। शक्ति की पूर्णता तब प्राप्त होती है, जब आप पवित्र आत्मा के तीनों अनुभवों में चलते हैं।

पवित्रात्मा में पल पल परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का मतलब है की आप ने अपने अंदर की परमेश्वर की नदी के बहाव की ओर ध्यान लगाए हुए हैं, जो आप को उस से - यानी पवित्रात्मा से - मिलाती है, और आपकी बाहारी इंद्रीयों से उसे मुक्त करते हुए अपने जीवन में चलते हैं। आपकी आँखें यीशु पर हैं। आप मसीह से सचेत हैं। आप हृदय से नम्र हैं, यीशु की ताकत, शक्ति और ज्ञान में विश्वास रखते हैं, बजाए स्वयं के और पवित्रात्मा की दैवी नदी को आप के जीवन द्वारा मुक्त करते हैं, जिस से, विश्वास, आशा, प्रेम, आनंद, शांति और बाकी के पवित्रात्मा के फल नज़र आते हैं।

जैसे की इस पुस्तक के शुरूआत में बताया गया था, जब आप पवित्रात्मा की परिपूर्णता में चलेंगे तो आप दैवी ज्ञान और समझ दर्शाएंगे; अपने कार्य में अभीष्ट होंगे, पवित्रात्मा के आदेश पर भविष्यवाणी करेंगे, हृदय के इच्छा को अभिषिक्त करेंगे (उदाहरण: आप के कार्य से लगाव) हृदय के चाल चलन को अभिषिक्त करेंगे (उदाहरण: हिम्मत, विश्वास) और हृदय के अभिषिक्त भावनाएँ (उदाहरण: खुशी, धन्यवाद)।

यदी पवित्रात्मा की परिपूर्णता के बारे में और जानना चाहते हैं तो पढ़िये "ए प्लेन अकाऊंट आफ क्रिस्टीएन परफैक्शन", जॉन बैसली द्वारा लिखित, "अबाईड इन क्राइस्ट", ऐण्डरू मुररे द्वारा, या "नैचुरली सुपरनैचुरल", मार्क और पैटी द्वारा।

लिखीए की इन तीनों अनुभवों में आप कहाँ हैं और परमेश्वर आप से क्या कहा रहा है।

शक्ति में बपतिस्मा

चाहे गिरजाघर यूहन्ना २०:२२ में बनाया गया हो, यीशु ने अपने चेलों से बाट जोहते रहने को कहा, ताकी ऊपर से शक्ति पा सके, इस से पहले की वे प्रचार शुरू करें (प्रेरित १:४,५) उन्होंने इस वादे को प्रेरित २:१-४ में पाया जब बपतिस्मा लिया और पवित्रात्मा की परिपूर्णता और यह उनके चारों ओर दुनिया के लिए, आत्मिक शक्ति के लिए महत्वपूर्ण सोत्र बन गयी।

पवित्रात्मा के तिन कार्य	पापों से मुक्ति	पवित्र आत्मा में बपतिस्मा	पवित्रात्मा से परिपूर्णता
-----------------------------	--------------------	------------------------------	------------------------------

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

अनुभव	पवित्र आत्मा व्याक्ति के अंदर वास करती है	पवित्रात्मा मनुष्य पर आती है	मनुष्य लगातार पवित्रात्मा को सौपता है
मुख्य शब्द जो पवित्रात्मा की स्थिती को बतलाता है।	"में" (यूहन्ना ७:३८,३९)	"पर" (प्रेरित १:८)	"परिपूर्ण" (इफि ५:१८)
वचन	रोमियों ८:९ यदि किसी में मसीह की आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।	लूका ३:१६ वह तुम्हे पवित्रात्मा से बपतिस्मा देगा।	इफिसियों ५:१८ दाखरस से मतवालेन बनो, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।
विशिष्ट समूहों पर ज्यादा दबाव	बैपटिस्ट	पेन्तीकुस्त	मेथोडिस्ट
अनुभव को कई नाम दिए गए	उद्धार (रोम १०:९,१०) अंदर वास कर रही	बपतिस्मा (प्रेरित १:५) सामर्थ से	पवित्रात्मा से परिपूर्ण (इफि ५:१८) पवित्रता (१थिस

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

	(यूहन्ना ७:३८,३९) पुनर जन्म (यूह ३:३) मसीह की देह मे बपतिस्मा (१ कुरि १२:१३)	परिपूर्ण (लूका २४:४९) शक्ति का बपतिस्मा (प्रेरित १:८)	५:२३) बने रहो (यूहन्ना १५:४)
इन तीन कार्यों का एक उदहारण पतरस, यूहन्ना और दूसरे चेलो में	पवित्रात्मा लो (यूहन्ना २०:२२)	सारा घर भर ...हर एक पर आ ठहरी।	पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो गए और परमेश्वर का वचन हियाव से
यूनानी परिज्ञान : यह दिलचस्प बात है की सारेतीनों आत्मा के कार्यों में, आप सहनशील है।	"जन्म" (यूहन्ना ३:३)	"पाना" (प्रेरित १०:४७)	"परिपूर्ण" (इफि ५:१८)
यूनानी	"जन्म" (यूहन्ना ३:३)	"पाना" (प्रेरित १०:४७)	"परिपूर्ण" (इफि ५:१८)

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

परिज्ञान : यह दिलचस्प बात है की सारेतीनों आत्मा के कार्यों में, आप सहनशील है।	अनिश्चित काल सूचक भूतकालिक क्रिया: कुछ कार्य जो भूतकाल में हुआ हो।	क्रिया : प्रेरित १:५ "बपतिस्मा"	अनिश्चित काल सूचक भूतकालिक सूचक भूतकालिक काल निरन्तर या दोहराए गए कार्य
	कर्मवाच्य : कार्य आप के साथ हुआ है	कर्मवाच्य:प्राप्त करना न की योन्यता	कर्मवाच्य : परिपूर्ण होना

कुछ विचार विमर्श	उद्धार पाने से आप स्वर्ग जाएंगे।	पवित्रारत्रात्मा मे बपतिस्मा, राह खोलता है, परमेश्वर से हो रहे सीधे अनुभव केलिए।	अंदर की शक्ति तब बहना शुरू करती है जब आप लगातार उस का कहना मान कर उस में चलते रहों
-------------------------	---	--	---

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

	आपकी आत्मा उसकी आत्मा से मिलती है।	आप का प्राण फिर से आप की आत्मा से मिल जाता है	आप पूर्ण रूप से (आत्मा, प्राण, शरीर)से उसकि आत्मा से भर जाते हैं।
प्रप्ती के लिए निजी तैयारी	पापों की क्षमा और यीशु पर विश्वास (प्रेरित २:३८)	बाट जोहते रहो (प्रेरित १:४, भजन ४६:१०)	शरीर पर भरोसा मत रखो (फिल ३:३)
	यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे (रोम १०:९,१०)	अपने आप को वश में कर, खास कर के अपनी जीभ को, जो आप के अंगो में अधर्म है (याकुब ३:१-८, प्रेरित २:४)	एक ही लक्ष्य यसीह में पह- चाने जाए। (फिल ३:८,९)
	गहराई से मानना की तुम परमेश्वर के पुत्र हो।(रोम ८:९, १४-१६)	विश्वास में बोलो, यकीन से की आत्मा आप को बोलने की सामर्थ्य देगी। (प्रेरित २:४)	लगातार परमेश्वर की आवाज और उपस्थिती पर जो तुम्हार अदर है ध्यान, लगाए रखों। (रोमि ८:१४)

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

आखिरी विचार: जब कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा के तीनों अनुभवों पर चलेगा तब उसे मसीह की आत्मा से भरे प्रचार और शुरूआती मसीहत दोबारा मिलेगी।

नए नियम के तीन बपतिस्मों को क्रम में लगाना

	मसीह की देह में बपतिस्मा	पानी में बपतिस्मा	पवित्रात्मा में बपतिस्मा
मुख्य वचन	१कुरि १२:१३ एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया है।	प्रेरित २:३८ द्वारा मनफिराओ और यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लो।	लूका ३:१६ वह तुम्हें पवित्रात्मा से बपतिस्मा देगा। प्रेरि १:५ पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।
होने का	उद्धार के वक्त	परिवर्तन के	उद्धार के बाद

पवित्रात्मा में बपतिस्मा कैसे पाए

समय		तुरन्त बाद	(पानी के बपतिस्मा के पहले या बाद में)
बपतिस्मा देने वाला	आत्मा	यीशु का कोई चेला	यीशु
बपतिस्मा का माध्यम	मसीह की देह	पानी	पवित्र आत्मा

अन्य भाषा की मूल्यता के चार दृश्य :

१. अन्य भाषा बोलना एक रास्ता खोलता है जिस से परमेश्वर से सीधा सम्पर्क बनता है, आप की मदद करता है की आप अर्थ और तीव्रता को अनुभव करें जब वह आप को सब चीज़ों के केंद्र, यीशु मसीह और पवित्रात्मा की ताकत से ज्यादा नज़दीकी से जोड़ता है ।
२. अन्य भाषा बोलना मसीही जीवनि का केंद्र बन जाता है। मसीह, जो की जीवन का केंद्र है, उसे एक अनुभाव से बदला गया है और मसीही उन्नती बन्द हो जाती है ।
३. अन्य भाषा बोलना, स्वयं को जान बूझ कार त्यागना है, एक अविवेकि स्थिती को और इस कारण यह अर्थहीन है या आत्मिक दुनिया की ताकतों के लिए एक दम विरुद्ध और इस कारण भयंकर है, जिस से निजी नुकसान हो सकता है ।
४. अन्य भाषा बोलना एक अनुभव था, परमेश्वर से चल रहे वार्तालाप का। भूतकाल के मसीहों ने इस दैवी वरदान का आनंद लिय परन्तु यह आज के गिरजाघरों या मसीहों को उपलब्ध नहीं है ।

आप ने क्या समक्षा की, अन्य भाषा बोलने का मूल बाईबल के दृश्य से क्या है ?

एक विचार जो चर्चा के योग्य है :

आप कई बार सोचते होंगे की कैसे कुछ करने पर आप समझ नहीं पाते हैं की यह आप को कैसे बदल देता है, जैसे की कुरिंथियों वादा करता है की अन्य भाषा बोलने से होगा। मानस शास्त्र जाननेवालों ने यह खोज निकाला है की, बिना आप के जाने या उन को समझे बिना, स्वपन आप पर असर करते हैं। यदि आप लगाताकर स्वपन नहीं देख पाते, तो आप एक मानसिकता या भावुकता में टूट सकते हैं। यदि आप के हृदय से आप के स्वपन बात करने लगें तो यह चंगाई और तंदरुस्ती प्रधान करते हैं। तो क्या यह विश्वास करना आसना नहीं की अन्य भाषा जो आप की आत्मा से निकलती है और पवित्रात्मा से मिलती है वह आप में आत्मिकता, मानसिकता और भावुकता से खुशहाली नहीं लाएगी ?

पवित्रात्मा में बपतिस्मा लेने के लिए, समूह को राह दिखाने के कुछ क्रम

- * समूह के साथ मिलकर इस पुस्तक को पढ़िए, विवाद प्रश्न और उत्तर के लिए समय रखीए। दैवी ज्ञान को खोजीए की परमेश्वर उन सबों को पवित्रात्मा में बपतिस्मा देना चाहता है। जब वे उस से पूछेंगे तो वह उन्हें पवित्रात्मा में बपतिस्मा देगा और वे अन्य भाषा बोलेंगे, जैसे ही वे परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए पानी से बाहर कदम रखेंगे। विश्वास चमत्कार पैदा करता है।
- * वे जो बपतिस्मा लेने के इच्छुक हैं, वे सामने आ जाएं। उन्हें आमंत्रित करीए जो बपतिस्मा ले चुके हैं की वे उन के चारों ओर इकठे हो और अपने हाथ उन पर रखें।
- * पवित्र आत्मा की उपस्थिति का स्वागत करते हुए, प्रार्थना करीए।
- * उसकी उपस्थिति के लिए उस का धन्यवाद दीजीए की उस ने आप की प्रार्थना का जवाब दिया।
- * जो बपतिस्मा लेने वाले हैं उन से प्रार्थना करने को कहीए, पवित्रात्मा में बपतिस्मा को माँगते हुए और अन्य भाषा में बोलने के वरदान के लिए (आप के पिछे प्रार्थना को दोहरा सकते हैं)
- * बपतिस्मा लेने वालों पर हाथ रख कर, प्रार्थना करीए की वे पवित्रात्मा में बपतिस्मा और अन्या भाषा बोलने का वरदान पाए।

- * हर एक को प्रोत्साहित करीए की वे अपनी निजी भाषा में जोर जोर से परमेश्वर की आराधना करने लगे और धन्यवाद देते रहें।
- * फिर हर किसी को निर्देश दीजिए की वे अपनी निजी भाषा में बोलना छोड़ दें और जो पवित्रात्मा कहने को बोलता है, उस वाक्य को बोलें (प्रेरित २:११) हर किसी को प्रार्थना में लगे रहने को कहीए और आराधना करते रहने को कहीए बिना ध्याना दीए की वे क्या वाक्य बोल रहे हैं, परन्तु पवित्रात्मा के बहाव को नियंत्रण सौंपते हुए। इस विश्वास को दोहराईए की जब मसीही का मन प्रभु परमेश्वर यीशु मसीह पर लगा हुआ है और वह अंदरूनी नदी के बहाव पर ध्यान लगाते हैं, तो जो बहाव निकलता है वह यीशु से होगा।
- * जब तक सब ना पा लें, इस तरह करते रहिए। समय समय पर अपना कान उस के मुँह पर लगाईए जिस के लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं और उन्हें प्रोत्साहन दीजिएअ जब आप उन को सुनते हैं (अक्सर लड़खड़ाते शब्दों) एक नयी भाषा में। लड़खड़ाना इसलिए की वे तार्किकता को छोड़ रहे हैं और दैवीता से मुलाकात कर रहे हैं जो की पश्चिमी दुनिया के लोगों के लिए एक बहुत बड़ा कदम है।

सबसे बड़ी रुकावटें जिन्हें लाघना है।

- * बपतिस्मा लेने वाला अपनी निजी भाषा में बोलना नहीं छोड़ेगा।
- * बपतिस्मा लेने वाला पूरी तरह से प्रार्थना करना छोड़ कर, खामोश खड़ा हो जाए।

सुझाव :

- * बपतिस्मा लेने वाले से कहीए की वह फिर से तार्किकता को छोड़ कर क्षमा माँगे, "मैं अपने अंदर पवित्रात्मा की नदी के बहाव का आदर करता हूँ और मैं अपना ध्यान इस बहाव की ओर लगाऊँगा और इस बहाव से ही बोलूँगा"।
- * उसे प्रोत्साहन दीजिए की वह विश्वास के साथ कदम आगे रखे, यह मानते हुए की परमेश्वर उन्हें फल देता है जो उसे खोजते हैं और वह कहे, "मैं सामान्य, बच्चों के से विश्वास में होकर वह बोलूँगा जो पवित्रात्मा का बहाव मुझे बोलने को कहेगा"। फिर जब वह ऐसा करता है तो उसे सहारा दीजिए, चाहे वह लड़खड़ाते हुए शुरू करे। सामान्य

रूप से हम जब कुछ नया करने लगते हैं तो हम हिचकिचाते हैं और प्रयोग करने लगते हैं और इस में विश्वास में चलना सीखना और विश्वास में बोलना सीखना भी शामिल है। इस क्रम को प्रोत्साहन देने के लिए, उस से कहीए की वह अपनी अंदरूनी आँखें यीशु पर टिकाए और अपने मस्तिष्क में उस की आराधना अपनी निजी भाषा में करे, और होंठों से उस की आराधना अन्य भाषा में करे। जब वह आत्मिक अनुभव पा रहा हो और उसके बारे में वह विचार करने लगे, तो उसे इस बात को करने से मना करीए। यदी वह विचार करने लगे तो उसके तार्कीक शक उसके आत्मिक अनुभव को रोक देंगे। जो विश्वास करते हैं वो पाते हैं, जो तर्क करते वे नहीं (मरकुस ११:२४)। उसे विश्वासी होना ज़रूरी है, क्योंकि यदी वह शक करता है तो वह परमेश्वर से कुछ भी नहीं पाएगा (याकुब १:७६,७)। उसे सलाह दीजीए की वह विश्वास करे और विश्वास के साथ कदम रखे की जब वह ऐसा करता है तो, परमेश्वर उसे मिलता है और एक चमत्कार होता है। होता है।

- * जान जाईए की यदि उस ने अपनी निजी भाषा में बोलना जारी रखा या बोलना बिल्कुल बंद कर दे, तो कोई चमत्कार नहीं होगा। उसे यह स्पष्ट करीए की उसे विश्वास में वाक्य बोलने हैं। सचेत रह कर मास्तिष्क के नियंत्रित वाक्य नहीं। तब वह पानी पर चलेगा और एक महिमा और विश्वास के चमत्कार का अनुभव करेगा। यह विश्वास के नियम हैं।

परमेश्वर की आवाज़ सुनने के चार तरीके

यह युग जिस में हम जी रहे हैं, यह तार्कीक्ता और ज्ञान संबन्धि, विभाजन संबन्धि विचारों से बिवाद में बंद गया है की, जब हम सुनते हैं की किसी ने परमेश्वर की आवाज सुनी, तो हम उसकी हँसी उड़ाते हैं। परन्तु कुछ कारण वश हम उसका तिरस्कार नहीं करते। पहले, पुरुष और औरत दोनो ने ही पूरी बाईबल में परमेश्वर की आवाज सुनी। यह भी की, कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित पुरुष और औरतें हैं जो परमेश्वर के लोग हैं, वे आज भी जीवित हैं यह बताने के लिए की वे परमेश्वर की आवज़ सुनते हैं। आखिर में, हम सब में एक गहरी भुख है की हम परमेश्वर से बातचीत कर सकें और उसे अपने मन में बात करते सुनें।

एक पुनर जन्म लिए हुए, बाईबल विश्वासी मसीह होने के नाते, मैं कई वर्षों तक परमेश्वर की आवाज सुनने के लिए असफल प्रयत्न करता रहा। मैंने प्रार्थना करीं, उपावस रखा, बाईबल पढ़ी और अंदरूनी आवज को सुनने की कोशिश करता रहा, पर कोई फायदा नहीं हुआ। कोई अंदरूनी आवज नहीं थी जिसे मैं सुन सकता। तब परमेश्वर ने मुझे एक साल के लिए अलग

किया, ताकी में अध्यना करूँ, पढ़ सकूँ और प्रयोग कर सकूँ उस की आवाज को सुनना सीखने के क्षेत्र में। इस समय, परमेश्वर ने मुझे चार चाबीयाँ बताई जिस से दो तरफा प्रार्थना के दरवाजे खोले जा सकते हैं। मैं ने यह खोजा है की ये न सिर्फ मेरे लिए उपयोगी है परन्तु उन हज़ारों विश्वासीयों के लिए भी जिन्हें इन का इस्तेमाल करना लिखाया, जिस से उन्हें, मसीह अनभव की बहुत बड़ीया नज़दीकी मिली और उन का जीने का ढंग बदल गया। ये आप के साथ भी होगा, यदी आप परमेश्वर को खोजेंगे, इन चार चाबीयों का उपयोग कर के। ये सब हबक्कूक २:१,२ में पाई जाती हैं। मैं चाहता हूँ की इससे पहले की हम आगे बढ़े, आप इस वचन को पढ़ीये।

चाबी १ - हमारे हृदय में परमेश्वर की आवाज़ एक स्वैच्छिक विचारों के बहाव कि तरहा लगती है। इस कारण मैं जब परमेश्वर की ओर ध्यान लगाना चाहता हूँ, तो मैं स्वैच्छिता पर ध्यान लगाता हूँ।

बाईबल कहती है, "यहोवा ने मुझ से कहा" (हब २:२)। हबक्कूक परमेश्वर की आवाज को पहचानता था। एलिय्याह इसे दबा हुआ धीमा शब्द कहता है (१ राजओं १९:१२)। मैं ने अकसर अंदरूनी स्पष्ट आवाज सुनी है और यकीनन परमेश्वर कई बार इस तरह बात करता है। फिर भी, मैंने यह देखा है की हम में से ज्यादातर लोगों को ज़्यादातर समय पर, परमेश्वर की अंदरूनी आवाज़, स्वैच्छिक विचारों, दर्शनों, स्पर्श या छवीयों के रूप में आती है। उदहारण के लिए, क्या हम में से हर एक जन को यह अनुभव हुआ है की आप राह पर गाड़ी चला रहे हों और अचानक एक विचार आता है की किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करे? हम सामान्य रूप से इसे परमेश्वर की अंदरूनी आवाज़ के रूप में स्वीकार करते हैं, जो हमें उस व्याक्ति के लिए प्रार्थना करने को कह रही है। आप के लिए मेरा प्रश्न यह है, "आप को गाड़ी चलाते में परमेश्वर की आवाज़ की ध्वनी किस तरह लगी? क्या यह अंदरूनी स्पष्ट आवाज़ थी या एक स्वैच्छिक विचार था जो आप के दिमाग में आया?" आप में से ज्यादातर यही कहेंगे की परमेश्वर की आवाज आप को स्वैच्छिक विचार के रूप में मिली।

सो, मैंने अपने आप में सोचा, "शायद जब मैं परमेश्वर की आवाज़ सुनूँ, तो मैं स्वैच्छिक विचारों के बहाव को सुनीं। हो सकता है, आत्मा के स्तर का मिलन, स्वैच्छिक विचारों, छवीयों, स्पर्श और दर्शनों के रूप में मिले। प्रयोग करते हुए और कईयों से विवाद करने के बाद मैं संतुष्ट हुआ हूँ की यह ऐसा ही है।

बाईबल इसे कई तरीकों से पुष्टी करती है। इब्रानी शाब्द 'पागा' जिसे मध्यस्त की जगाह, इस्तेमाल किया है उस की परिभाषा है, "अचानक मुलाकात" या "अकस्मात् मिलना।" जब परमेश्वर मध्यस्त के लिए हमारे मनों में लोगों को लाता है, वह उसे पागा के द्वारा करता है,

अचानक मुलाकात का विचार या स्वैच्छिक विचार। जब मैं शांती से परमेश्वर के सामने प्रार्थना में होता हूँ, तो मैंने देखा है की जो स्वैच्छिक विचारों का बहाव आ रहा है वह यकीनन परमेश्वर की ओर से है।

चाबी २ - मुझे मेरे विचारों और भावनाओं को शांत करना सीखना है, ताकी मैं परमेश्वर के विचारों और भावनाओं के बहाव को जान सकूँ, जो मेरे लिए हैं।

हबक्कूक कहता है, "मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, और गुम्मत पर चढ़कर ठहरा रहूँगा....." (हब २:१)। हबक्कूक जानता था की परमेश्वर की शांत अंदर के स्वैच्छिक विचारों को सुनने के लिए, उसे पहले एक शांत जगह पर जाना होगा और अपने निजी विचारों और भावनाओं को शांत करना होगा। भजन संहिता ४६:१०, हमें शांत होने को कहती है की जान लो की वही परमेश्वर है। हमारी आत्मा में एक गहरी अंदरूनी जानकारी है, जिसे हम में से हर एक अनुभव कर सकता है जब हम अपने शरीर और दिमाग को शांत करेंगे।

मैंने अपने आप को शांत करने के कई तरीके दूँढ निकाले हैं, जिस से मैं परमेश्वर के स्वैच्छिक बहाव को आसानी से चुन सकता हूँ। एक शांत आराधना के गीत से परमेश्वर को प्रेम करना मेरे लिए एक महत्वपूर्ण तरीका है (॥ राजाओं ३:१५)। वह यह है की जब मैं शांत हो जाता हूँ (विचारों, इच्छा और भावनाओं से) और परमेश्वर के सामने शांत होता हूँ, तो दैवी बहाव निकलता है। इसलिए, मैं पहले शांती से आराधना करने के बाद शांत होता हूँ, और अपने आप को उस स्वैच्छिक बहाव के लिए खोलता हूँ। यदी विचार उन चीज़ों के बारे में आते हैं, जिन्हें मैं करना भूल गया हूँ, मैं उन्हें लिख लेता हूँ और फिर उन्हें छोड़ देता हूँ। यदि विचार अपराध के या अयोग्यता के आते हैं, तो मैं पूर्ण रूप से पश्चताप करता हूँ, और उस को सदाचार का चोगा पहनाता हूँ और अपने आप को परमेश्वर के सामने बेदाग देखता हूँ। (यशा ६१:१०, कुल १:२२)।

जब मैं अपनी आँखें यीशु पर लगाता हूँ, (इब्र १२:२), उसकी उपस्थिती में शांत हो कर और उस के साथ जो मेरे मन पर है उस बात को बाँटता हूँ, तो मैं अनुभव करता हूँ की दोतरफा बात चीत का बहाव बेहने लगता है। परमेश्वर के सिंहासन से मेरी ओर स्वैच्छिक विचार बहने लगते हैं, और मैं राजाओं के राजा के साथ बात करने लगता हूँ।

यदि आप परमेश्वर के शुद्ध वचन पाना चाहते हैं, तो यह बहुत आवश्यक है की आप शांत हो जाएँ और सही दिशा पर केंद्रित हो जाएँ। यदि आप शांत नहीं हैं, तो आप केवल अपने विचार ही पाएँगे। यदी आप सही ढंग से यीशु पर केंद्रित नहीं हैं, तो, आप अशुद्ध बहाव पाएँगे, क्योंकि जो अंतर्ज्ञान से प्राप्त बहाव है वह उस से आता है जिस पर आप अपनी आँखों को केंद्रित करते हैं। इसलिए, यदि आप अपनी आँखें यीशु पर लगाते हैं, तो

अंतर्ज्ञान का बहाव यीशु से आता है। यदी आप अपनी आँखें किसी मन की इच्छा पर लगाते हैं, तो अंतर्ज्ञान का बहाव आपकी उस मन की इच्छा से आता है। एक शुद्ध बहाव पाने के लिए आप को शांत होना है और दूसरी बात, आप को यीशु पर आँखें लगानी है। मैं फिर से कहूँगा की, शांती से राजा की आराधना करना, और फिर उसे शांती से पाकर पूरा करना आसान है।

चाबी - ३ जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तो मैं अपने मन की आँखों को यीशु पर लगाता हूँ, और आत्मा में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वपन और दर्शन देखता हूँ।

हम ने इस से पहले के परिच्छेदों में इस विषय पर संकेत किया है। परन्तु हमें इस पर और विस्तार से बात करनी है। हबककूक कहता है, "ताकता रहूँगा की मुझ से वह क्या कहेगा, और परमेश्वर ने कहा, दर्शन की बातें लिख दे" (हब २:१,२)। यह बहुत दिलचस्प बात है की हबककूक प्रार्थना करते में दर्शन देखना चाहता था। वह अपने मन की आँखों को खोलना चाहता था, और आत्मा की दुनिया में देखना चाहता था की परमेश्वर उसे क्या बताना चाहता है। यह एक दिलचस्प ख्याल है।

मैंने कभी अपने मन की आँखों को खोल कर दर्शन देखना नहीं चाहा। परन्तु, मैं जितना इस के बारे में सोचता, मुझे उतना ही अधिक अहसास होता की यही वह चीज़ है जो परमेश्वर चाहता है की मैं करूँ। उस ने मुझे मन में आँखें दी है। उन का अपयोग मुझे आत्मा की दुनिया में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कार्यों को देखने के लिए करना है। मैं जानता हूँ की मेरे चारों ओर आत्मिक दुनिया कार्य कर रही है। यह दुनिया, स्वर्गदूतों, शैतानों, पवित्रात्मा, विश्वव्यापी परमेश्वर और उनके विश्वव्यापी पुत्र, यीशु, से भरी हुई है। कोई कारण नहीं है की मैं इसे न देखूँ, केवल मेरी, तार्कीक भयता के, जो मुझे कहती है की इस पर विश्वास नही करना की यह है और कोई निर्देश नही देती की मैं इस आत्मा की दुनिया को कैसे देखूँ।

इसे देखने के लिए सब से पहली आवश्यकता है की इसे देखें। दानियल अपने दिमाग में एक दृष्य देख रहा था और वह बोला, "मैंने देखा... मैंने देखते देखते अन्त में क्या देखा.....स्वपन में देखा" (दान ७:२,९,१३)। अब जब मैं प्रार्थना करता हूँ। तो मैं यीशु को अपने साथ उपस्थित देखता हूँ और मैं उन्हें मुझ से बातें करते देखता हूँ, उस के मन पर जो बातें हैं उन्हें कहते और करते देखता हूँ। कई मसीही यह पाएँगे की यदि वे खोजेंगे तो देखेंगे। यीशु इमानुएल है, यानी परमेश्वर हमारे साथ (मत्ती १:२३)। यह बहुत आसान है। आप स्वैच्छिक अंदरूनी विचारों को जैसे पाते हैं, उसी प्रकार स्वैच्छिक अंदरूनी दर्शन भी पाएँगे। आप मसीह को अपने साथ एक आरामदेह जगह पर उपस्थित

देख सकते हैं, क्योंकि मसीह आप के साथ आरामदेह जगाह में उपस्थित है। असल में, अंदरूनी दर्शन इतने आसानी से आते हैं की आप उन्हें अपने विचार समझ कर धुतकार दोगे। (शक, शैतान का मसीहत के खिलाफ सबसे बड़ा यंत्र है।) परन्तु यदि आप इन दर्शनो को लिखने लगे तो आप का शक विश्वास में बदल जाएगा, क्योंकि आप जान जाएंगे की इस का तत्व सर्वशक्तिमान परमेश्वर से पैदा हुआ है।

परमेश्वर लगातार अपने लोगों को स्वपनों और दर्शनो के माध्यम से नज़र आते रहे। उन्होंने ऐसा उत्पत्ती से प्राकशित्वाक्य तक किया और यह कहा की, क्योंकि पवित्र आत्मा, प्रेरितों के काम २ में उण्डेला गया, इस कारण हमें स्वपनों और दर्शनों के लगातार बहाव में लगे रहना है (प्रेरित २:१-४, १७)। यीशु, हमारा बिलकुल सही उदहारण है, उन्होंने यह योग्यता की सर्वशक्तिमान परमेश्वर के चल रहे संविदा के साथ जिया जा सकता है। उन्होंने कहा की वे अपने आप कुछ नहीं करते, परन्तु वही करते हैं. जो वे पिता को करते देखते हैं और सुनते हैं की पिता क्या कह रहा है (यूहन्ना ५:१९,२०,३०)। क्या लाजवाब तरीका है जीने का।

इस दैवी तरीके के साथ जैसे यीशी रहते हैं, क्या हम भी जी सकते हैं? यीशु की मृत्यु और पुणरुत्थान का एक सबसे बड़ा मकसद था उस परदे को ऊपर से नीचे तक फाड़ कर, उन्होंने हमें परमेश्वर की उपस्थिती का सीधा रास्ता दिखा दिया, और हमें आदेश है की हम और करीब हो जाएं (लूका २३:४५ इब्रा १०:१९-२२)। मैं जो कह रहा हूँ, वह एक तार्किक इसे बाईबल की शिक्षा और अनुभव का केंद्र बताया गया है। अब समय है की जो मसीहत का है वह मसीहत को मिले।

उन के तार्किक स्वभाव व बहुत ही अधिक तार्कीक सभ्यता के करण, कुछ लोगो को इस सच्चाई को समझने में सहायता की आवश्यकता पड़ेगी, इस से पहले की वे इन मे और आगे बढ़ें। उन्हें यह मदद मिलेगी, परमेश्वर से बंधुत्व, नामक पुस्तक जो इसी लेखक ने लिखी है।

चाबी - ४: लिखना, जो हम प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर के जवाबो को लिखने से, परमेश्वर की आवज को सुनने में बड़ी स्वतंत्रता मिलती है।

परमेश्वर ने हबक्कूक से कहा की वह दर्शन की बातें पटियों पर लिखे...(हब २:२)। यह बात मेरे दिमाग मे कभी नहीं आई की मैं अपनी प्रार्थना को और परमेश्वर के जवाबों को लिखूँ, जैसा की परमेश्वर के आदेश पर हबक्कूक ने किया। यदी आप इस विचार को लेकर, पवित्रशास्त्र में खोजें, तो आप सैकड़ों पाठ देखोगे जो इस बात को बताते हैं (भजन

संहिता, कई भविष्यवक्ता, प्रकाशितावक्य) फिर मैंने ऐसा क्यों नहीं सोचा?

मैं इस क्रम को "बहिकाता" कहता हूँ, और मैं इसे प्रयोग में लाने लगा। मैंने खोजा की परमेश्वर के अंदरूनी बहाव को पहचानने का एक अच्छा तरीका है, क्योंकि जब मैं लिखने लगा तो मैं यह लम्बे समय के लिए विश्वास में करने लगा, केवल इस विश्वास में की यह परमेश्वर है।

मैं जब पा रहा था तों, मुझे इस की परिक्षा नहीं करनी पड़ी (क्योंकि यह बहाव को रोक देता है), क्योंकि मुझे पता था की जब बहाव खतम होगा तो मैं वापस जाकर उस का ध्यान पूर्वक परिक्षण कर सकता हूँ, इस बात को यकीन करके की यह पवित्रशास्त्र के अनुसार है।

जब, आप सीखने लगेंगे तो आप हैरान हो जाएंगे। पहले शक आप को रोकेगा, परन्तु इस शक को फैंक दीजिए, अपने आप को ये बात याद दिलाईए की यह बाईबल से सम्बंधित है और यह की परमेश्वर उपस्थित है, अपने बच्चों से बात करने के लिए। अपने आप को अधिक गंभीरता से मत लीजिए। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप तनाव मेहसूस करते हैं और यह पवित्र आत्मा के कार्य के बीच में आता है। यह जब हम आपने कामों को खतम कर आराम करते हैं तब परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश कर सकते हैं (इब्रा ४:१६)। इसलिए, अपने चेहरे पर एक मुस्कुराहट लाईए, आरम से बैठीए, अपना कागज और कलम निकालीए, और अपना ध्यान स्तूती और अराधना द्वारा परमेश्वर पर लगाईए, उसके मुख को खोजते हुए। जब आप परमेश्वर के लिए अपना प्रश्न लिखें, तो शांत हो जाईए, अपना ध्यान यीशु पर लगाईए, जो आप के साथ उपास्थित है। आप कों अपने सवाल का एक अच्छा जवाब मिलेगा। इस पर शक मत करीए, केवल लिख लीजिए बाद में जब आप जो लिखा है उसे पढ़ेंगे, तो आप भी, यह बात जान कर आशिशित होंगे की आप यकीनन परमेश्वर से बात कर रहे हैं।

कुछ अंतिम टिप्पणीयाँ: कोई इस कार्य को तब तक न करे जब तक आप कम से कम नया नियम पूर्ण रूप से न पढ़ लें (वैसे तो, पूरी बाईबल) ना ही बिना किसी की आत्मा में मार्गदर्शन के बिना इसे करे। जो भी आप लिखते हैं, उसे प्रस्तुत कर उस पर कार्य करना हागा।

आगे पढ़ने के लिए :

जांन शैरिल द्वारा, वे अन्य भाषा बोलते हैं: एक धार्मिक पुस्तक जो लोगों के जीवन में पवित्रात्मा का बपतिस्मा का असर की कहानीयाँ।

डैरेक प्रिस द्वारा आत्मा भरे विश्वासी: इस में पवित्रात्मा का बपतिस्मा के बारे में यूनानी में विस्तार से पढ़ाई है।

जैक डैरी द्वारा, आत्मा की शक्ति से चकित: बपतिस्मा में शिक्षा ले रहे एक व्यक्ति की कहानी जब वह परमेश्वर की शक्ति को अपने निजी जीवन में अपनाने लगा।

परमेश्वर से बंधुत्व यीशु परमेश्वर से बातचीत, मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा। यह दोनों पुस्तकें परमेश्वर की आवाज सुनने के चार तरीके हैं।

- १) अपने आपको शांत करें
- २) अपनी आँखें यीशु पर लगाएं
- ३) स्वैच्छिकता पर ध्यान लगाएं
- ४) आप जो पा रहे हैं उसे लिखिए। वे पढ़ने वाले को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ दो तरफा बातचीत सिखती हैं।

सामान्य तौर से अलौकिक, मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा मार्क और पैटी की साक्षीयाँ जब उन्होंने आत्मा में चलना सीखा, परमेश्वर की शक्ति को छोड़ते हुए बजाए स्वयं प्रयास के।

परमेश्वर की नदी में और गहरे जाना, मार्क विर्कलर द्वारा। यह मार्क का आत्मिक सफर है, किस तरह परमेश्वर ने उन्हें चंगा किया और सच्चाई जो उन्होंने ने उन्हें बतायी। जब मार्क अपना जीवन बाँटते हैं, वे चाहते हैं की आप भी उनके साथ परमेश्वर की पवित्रात्मा की नदी में गरहे जाएँ।

पचास किताबें, मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा, आप मंगा सकते हैं हमारी ऑन लाईन डब्ल्यू, सी डब्ल्यू जी मिनिस्ट्रीज़, औरजी या ७१६-६५२-६९९० या १-८००-४६६-६९६१ से मंग सकते हैं।

मसीही नेतागिरी विश्वा विद्यालय आप को १०० से भी अधिक आत्मा से परिपूर्ण, मानी जानी, कॉलेज स्तर के पाठ जो आप को डिग्री डॉक्टरेट तक की, जो पत्राचार द्वारा उपलब्ध है। जब आप दैवी प्रदर्शन की सच्चाई को जानेगे तो आप जीवन बदलने वाले सिद्धांतों को पाएंगे। समय के लिए कुछ भी नहीं छूटता। आप जो सीखना चाहते हैं, उसे सीखेंगे और पवित्रात्मा की ताकत से बदल जाएंगे। पैसे भरने की कई योजनाएँ हैं, जिस से आप का मासिक खर्च केवल \$ १०० आएगा। ज्यादा जानकारी के लिए लिखें डब्ल्यू कलू आनलाईन, काम या फोन करीए ७१६-६५२-६९९० या १-८००-४६६-६९६१ पर।

बपतिस्मां कैसे पाएँ के विषय में और लोग क्या कहते हैं

मुझे विश्वास है की यह पुस्तक ज्यादातर इन के उपयोग में आयेगी :

१. विवेकी मसीहों के मनो को खोलने के लिए जिन्हें धोखा दिया गया और मसीह की वादा की गयी आलौकिक जीवन से वंचित रखा गया।
२. पेंतिकोस्त और चमत्कारी विचारों में पवित्रात्मा के कार्यों के बारे में एक सिद्ध समझ उत्पन्न करते हैं। और
३. इस प्रश्न का जवाब देती है, "मैंने पवित्रात्मा में बपतिस्मा ले लिया, अब क्या?" "मुझे यह भी उम्मीद है की यह एक अदभुत औजार है जो खोजी मसीहों को पवित्रात्मा में बपतिस्मा की ओर और अन्य भाषा उपहार की ओर ले जाएगा।

जो ऐलीसन, सीईओ, गैपटैक इन. - एलेक्ट्रोनिक्स मनुफ़ैक्चरिंग चोम्पन्य एल्देर विथ दोवे क्रिस्तिन फ़ेल्लोव्शिप - रेड लिओन।

यह पुस्तक एक सामान्य मसीह की मदद करेगी ताकी पवित्रात्मा से वह बपतिस्मा पाए और अन्य भाषा के उपहारों को पा सके, जो की, व्यापारिक तौर से एक बुनयादी उपहार है जो हमारी मदद करता है की हम आत्मा के अन्य उपहारों को पा सकें और उन का उपयोग कर सकें। डा. विर्कलर का अन्य भाषा के रूप में पोरतुगली बोलना एक बहुत

ही अदभुत कार्य है और हमेशा की तरह पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों द्वारा, दिमाग और देह के तार्किक नियंत्रण पर काबु पा लेना और आत्मा के बहाव की ओर ध्यान लगाना जब आप अन्य भाषा में बोलना चाहें तो यह सब बहुत मदद करते हैं।

डा. गैरी ग्रेग, फ़ोउन्डेर, किन्डोम ट्रैनिंग नेटवर्क।